



नमाज़, दुरूद शरीफ़, इल्मे दीन, तौबा और सलाम की फ़ज़ीलत वग़ैरा पर मुश्रतमिल रंग बिरंगे फूलों का गुलदस्ता

صلى الله عليه وسلم

# 40 फ़रामीने मुस्ताफ़ा

40 Faraameene Mustafa (Hindi)

लो मदीने के फूल लाया हूँ  
मैं हदीसे रसूल ﷺ लाया हूँ

कसरते दुरूद का इन्ज़ाम

गुनाहों का कफ़रा

ग़ैबी मदद

सूदख़ोर की तौबा

चुग़ल ख़ोर गुलाम

हया इम़ान से है

फ़ितना वाज़ की मज़म्मत



مكتبة المدينة  
(دعوت اسلامی)

مكتبة المدينة  
(دعوت اسلامی)

شو'بہ اسلامی کتب

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-जूवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ  
दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले। (المستطرف ج 1 ص 40 دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तुल्लिबे गुमे मदीना

व बकीअ

व मग़िफ़रत

13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



## ( 40 फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ )

येह किताब ( 40 फ़रामीने मुस्तफ़ा ﷺ )

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात

M0. 9327776311 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

नमाज़, दुरूद शरीफ़, इल्मे दीन, तौबा और सलाम की फ़ज़ीलत  
वगैरा पर मुश्तमिल रंग बिरंगे फूलों का गुलदस्ता

## 40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)  
( शो 'बए इस्लाही कुतुब )

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ

- नाम रिसाला : 40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
 पेशकश : शो'बए इस्लाही कुतुब (अल मदीनतुल इल्मिय्या)  
 सिने तबाअत : मुहर्मुल ह़राम 1435 सि.हि.  
 नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

### मक-त-बतुल मदीना की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

- मुम्बई : 19,20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस  
 के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429  
 देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली  
 फ़ोन : 011-23284560  
 नागपुर : मुहम्मद अली सराय रोड (C/o) जामिअतुल मदीना,  
 कमाल शाह बाबा दरगाह के पास, मोमिनपुरा, नागपुर  
 फ़ोन : 0712 -2737290  
 अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़्लाहे दारैन मस्जिद के करीब, नला बाज़ार,  
 स्टेशन रोड, दरगाह, : (0145) 2629385  
 हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्स, A.J. मुढोल रोड, ब्रीज के  
 पास, हुब्ली - 580024. फ़ोन : 09343268414  
 हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद  
 फ़ोन : 040-24572786

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

## फ़ेहरिस्त

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
कुर्बे मुस्तफ़ा ﷺ	4	क़ब्र में आग भड़क उठी ?	48
कस्ते दुरूद की ता'रीफ़	5	कैदख़ाना	49
कस्ते दुरूद का इन्आम	7	दुन्या कैदख़ाना है	50
रहमतों की बरसात	8	मिस्कीन का हज़	51
दस रहमतें	9	हज़ की कुरबानी	51
निय्यत की अहम्मिय्यत	10	खुश ख़बरी सुनाओ	56
खुलूसे निय्यत	12	100 अपराद का कातिल	57
निय्यत अमल से बेहतर है	14	सलाम की अहम्मिय्यत	59
निय्यत का फल	14	तकब्बुर का इलाज	60
हुसूले इल्म की तरगीब	15	आ'ला हज़रत की आदते मुबा-रका	60
मदीनाए मुनव्वरह से दिमशक़ का सफ़र	16	मस्जिद में हंसने का नुक़सान	61
बेहतरीन शख़्स	17	कहकहा की मजम्मत	62
इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है	18	मिस्वाक की फ़ज़ीलत	62
रिज़क़ का ज़ामिन	21	जमाअत की फ़ज़ीलत	63
राहे खुदा ﷻ का मुसाफ़िर	22	25 मर्तबा नमाज़ अदा की	64
गुनाहों का कफ़ारा	25	जमाअत न छोड़ी	65
दीन की समझ	25	चुगुल ख़ोर की मजम्मत	65
नजात का ज़रीआ	28	चुगुली किसे कहते हैं ?	66
बोलने का नुक़सान	29	क्या हम चुगुली से बचते हैं ?	67
रहनुमाई की फ़ज़ीलत	30	चुगुली से तौबा	68
नेकी की दा'वत	30	चुगुल ख़ोर गुलाम	68
दुआ की अहम्मिय्यत	32	रज़ाक़ का करम	69
दुआ बला को टाल देती है	33	भुना हुवा हरन	70
गैबी मदद	33	हुया ईमान से है	72
धोका देने का नुक़सान	36	बा हुया नौ जवान	72
तौबा की बुन्याद	37	साक़िये कौसर ﷺ का फ़रमान	75
ताइब की फ़ज़ीलत	40	आका ﷺ का महीना	76
सच्ची तौबा किसे कहते हैं ?	41	शा'बान की तजल्लियात व ब-रकात	76
सूदख़ोर की तौबा	41	फ़ितना बाज़ की मजम्मत	77
नमाज़ की अहम्मिय्यत	44	अल्लाह ﷻ के लिये महब्बत करना	78
मछली अपनी जगह पर थी	44	नमाज़ क़ज़ा करने का वबाल	80
रौज़ए अक़दस की हाज़िरी	45	क्या कुछ दिन के लिये नमाज़ छोड़ सकते हैं ?	81
अज़ाबे क़ब्र	47		



## पहले इसे पढ़ लीजिये

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि रहमते आलम, नूरे मुजस्सम, रसूले मुकर्रम, सरापा जूदो करम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से अर्ज़ की गई कि उस इल्म की हद क्या है जहां इन्सान पहुंचे तो आलिम हो ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया :  
 “مَنْ حَفِظَ عَلَى أُمَّتِي أَرْبَعِينَ حَدِيثًا فِي أَمْرِ دِينِهَا بَعَثَهُ اللَّهُ فَقِيهًا وَكُنْتُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ شَافِعًا وَشَهِيدًا”  
 या 'नी जो मेरी उम्मत पर चालीस अहकामे दीन की हदीसों हिफज़ करे उसे अल्लाह एज़्रुह उठाएगा और क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ और गवाह होऊंगा ।”  
 (مشکوٰۃ المصابیح، کتاب العلم، الفصل الثالث، الحدیث ۲۵۸، ج ۲، ص ۶۸)

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इस हदीस के तहूत लिखते हैं : “उ-लमाए किराम फ़रमाते हैं कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के इस इर्शाद से मुराद व मक्सूद लोगों तक चालीस अहादीस का पहुंचाना है । चाहे वोह इसे याद न भी हों और इन का मा'ना भी इसे मा'लूम न हो ।” (اشعة للمعات، ج ۱، ص ۱۸۶)

मुफ़स्सिरे शहीर हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ف़रमाते हैं : “इस हदीस के बहुत पहलू हैं, चालीस हदीसों याद कर के मुसल्मान को सुनाना, छाप कर इन में तक्सीम करना, तरजमा या शर्ह कर के लोगों को समझाना, रावियों से सुन कर किताबी शक्ल में जम्अ करना सब ही इस में दाख़िल हैं या 'नी जो किसी तरह दीनी मसाइल की चालीस हदीसों मेरी उम्मत तक पहुंचा दे तो क़ियामत में उस का हशर उ-लमाए दीन के जुमरे में होगा और मैं उस की खुसूसी शफ़अत और उस के ईमान और तक्वे की खुसूसी गवाही दूंगा वरना उमूमी शफ़अत

और गवाही तो हर मुसलमान को नसीब होगी। इसी हृदीस की बिना पर करीबन तमाम मुहद्दिसीन ने जहां हृदीसों के दफ़्तर लिखे वहां अलाहिदा चेहल हृदीस जिसे अर-बईनिय्यह कहते हैं जम्अ कीं।”

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 221)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** मज़कूरा हृदीसे पाक में बयान कर्दा फ़ज़ीलत को हासिल करने के लिये और दीगर अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ 40 फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर मुश्तमिल तहरीरी गुलदस्ता तरतीब दिया गया है। जिस में फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बयान करने के बा'द मुस्तनद शुरूहाते अहादीस से अख़्ज कर्दा वजाहत भी दर्ज कर दी गई है नीज़ मौजूअ की मुना-सबत से हिकायात भी नक्ल की गई हैं। हर हृदीस का मुकम्मल हवाला भी दिया गया है। इन अहादीस को याद करने की ख़्वाहिश रखने वालों की आसानी के लिये आख़िरी सफ़हात में इस रिसाले में शामिल अहादीस का अ-रबी मतन भी दिया गया है।

इस रिसाले को न सिर्फ़ खुद पढ़िये बल्कि दूसरे इस्लामी भाइयों को इस के मुता-लआ की तरगीब दे कर सवाबे जारिया के मुस्तहिक बनिये। अल्लाह तआला से दुआ है कि हमें “अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश” करने के लिये म-दनी इन्आमात पर अमल और म-दनी क़ाफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए।

أَمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

शो 'बए इस्लाही कुतुब ( मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या )



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

हदीस (1) कुर्बे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज्जहुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने तक़रुब निशान है : “أُولَى النَّاسِ بِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَكْثَرُهُمْ عَلَى صَلَاةٍ” : है : में मेरे क़रीब तर वोह होगा, जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढे होंगे ।”

(جامع الترمذي، أبواب الوتر، باب ماجاء في فضل الصلاة على النبي ﷺ، الحديث ٤٨٤، ج ٢، ص ٢٧)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़ियामत में सब से आराम में वोह होगा जो रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ रहे और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की हमराही नसीब होने का ज़रीआ दुरूद शरीफ़ की कसरत है । इस से मा'लूम हुवा कि दुरूदे पाक बेहतरीन नेकी है कि तमाम नेकियों से जन्नत मिलती है और इस (या'नी दुरूदे पाक) से बज़्मे जन्नत के दूल्हा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ । (मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 100) दुन्या में दुरूद शरीफ़ की कसरत अक़ीदे की मज्बूती, निय्यत के खुलूस, महब्बत की सच्चाई और इबादत की हमेशगी

पर दलालत करती है। (فیض القدير، تحت الحديث ۲۲۴۹، ج ۲، ص ۵۶۰) लिहाज़ा हमें भी कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये।

## कसरते दुरूद शरीफ़ की ता'रीफ़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! चन्द बुजुर्गों के अक्वाल पेश किये जा रहे हैं। आप किसी भी एक बुजुर्ग के बताए हुए अ़दद को मा'मूल बना लेंगे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आप का शुमार कसरत से दुरूदो सलाम पढ़ने वालों में हो जाएगा और वोह तमाम ब-रकात व स-मरात हासिल हो जाएंगे जिन का अहादीसे मुबा-रका में तज़िकरा है।

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْبَى** कसरते दुरूद शरीफ़ की ता'रीफ़ बयान करते हुए फ़रमाते हैं : “रोज़ाना कम अज़ कम **1000** मर्तबा दुरूद शरीफ़ ज़रूर पढ़ें वरना **500** पर इक्तिफ़ा करें। बा'ज़ बुजुर्गों ने रोज़ाना **300** और बा'ज़ ने नमाज़े फ़ज़्र व अ़स्स के बा'द दो दो सो मर्तबा पढ़ने को फ़रमाया है और कुछ सोते वक़्त भी पढ़ने की अ़दत डालें।” आप **رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ** मज़ीद फ़रमाते हैं : “रोज़ाना कम अज़ कम **100** मर्तबा दुरूदो सलाम ज़रूर पढ़ना चाहिये।” फिर मज़ीद फ़रमाते हैं : “बा'ज़ दुरूद शरीफ़ के ऐसे सीगे हैं (म-सलन **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ**) जिन के पढ़ने से **1000** का अ़दद ब आसानी और जल्द पूरा हो जाता है। उसी को वज़ीफ़ा बना लिया जाए और वैसे भी जो कसरत से दुरूदे पाक पढ़ने का अ़दी होता है उस पर वोह आसान हो

जाता है। गरजे कि जो अशिके रसूल होता है उसे दुरूदो सलाम पढ़ने से वोह लज़्जत व शीरीनी हासिल होती है जो उस की रूह को तक्वियत पहुंचाती है।”

(जब्बुल कुलूब (मुतर्जम), स. 328, मुलख़बसन)

मरीजे हिज़्र को हो जाएगी की अभी तस्कीं

ज़रा मदीने के दारुशिशफ़ा की बात करो

हज़रते अल्लामा मुहम्मद यूसुफ़ बिन इस्माईल नब्हानी

अपनी किताब “أَفْضَلُ الصَّلَوَاتِ عَلَى سَيِّدِ السَّادَاتِ” में फ़रमाते हैं कि अल्लामा अब्दुल वहहाब शा'रानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي ने

“कश्फुल गुम्मह” में बयान किया है कि बा'ज़ उ-लमाए किराम

صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ فَرَمَاتے हैं, “सरकारे मदीना

पर ब कसरत दुरूद शरीफ़ की कम अज़ कम ता'दाद हर रात **700**

बार और हर दिन **700** बार है।” मज़ीद लिखते हैं : “एक बुजुर्ग

का बयान है : “कम अज़ कम कसरत रोज़ाना **350** बार दिन में

और हर शब में **350** बार है।” मज़ीद फ़रमाते हैं कि हज़रते इमाम

शा'रानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي ने अपनी किताब “अन्वारुल कुदसिय्या”

में फ़रमाया है : “हम से रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अहद

लिया कि हम आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर हर दिन और रात ब

कसरत दुरूदो सलाम पढ़ा करेंगे और अपने भाइयों के आगे इस का

अज़्रो सवाब बयान किया करेंगे और आं हज़रत صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

से इज़हारे महबूबत के लिये उन्हें पूरी तरगीब देंगे और यह कि हम हर दिन और रात और सुबह और शाम 1000 से ले कर 10,000 तक दुरूदो सलाम का विर्द करेंगे।” अल्लामा नब्हानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي मज़ीद फ़रमाते हैं : “हज़रते शैख़ नूरुद्दीन शौनी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَنِي रोज़ाना 10,000 बार दुरूदो सलाम पढ़ते थे और शैख़ अहमद ज़वावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي रोज़ाना 40,000 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ते थे।”

(افضل الصلوات على سيد السادات، الفصل الرابع، ص 30/31)

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिसे देहलवी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने शैख़े अजल अब्दुल वहहाब मुत्तकी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي से दुरूदे पाक की ता'दाद दरयाफ़्त की तो फ़रमाया कि “इस की कोई ता'दाद मुअय्यन नहीं है, जितना हो सके पढ़ो, इसी से रत्बुल्लिसान रहो (या'नी अपनी ज़बान तर रखो) और इसी के रंग में रंग जाओ।”

(مدارج النبوة، باب نهم ذكر حقوق آنحضرت ﷺ، ج 1، ص 327)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

कस्ते दुरूद का इन्आम

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अहमद बिन मन्सूर عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَفْوَر जब फ़ौत हुए तो अहले शीराज में से किसी ने ख़्वाब में देखा कि वोह शीराज की जामेअ मस्जिद के मेहराब में खड़े हैं और उन्होंने ने बेहतरीन हुल्ला (जन्नती लिबास) जैबे तन किया हुवा है और सर पर मोतियों वाला

ताज सजा हुआ है। ख़्वाब देखने वाले ने अर्ज़ की : “हज़रत ! क्या हाल है ?” फ़रमाया : “अल्लाह तआला ने मुझे बख़्श दिया और मुझ पर करम फ़रमाया और मुझे ताज पहना कर जन्नत में दाख़िल किया।” पूछा : “किस सबब से ?” फ़रमाया : “मैं ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ा करता था येही अमल काम आ गया।”

(القول البدیع، الباب الثانی فی ثواب الصلاة علی رسول ﷺ..... الخ، ص ۲۰۴)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

## हदीस (2) रहमतों की बरसात

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से रिवायत है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने रहमत निशान है : “صَلُّوْا عَلَیَّ صَلَّى اللهُ عَلَیْكُمْ” तुम पर रहमत भेजेगा।” (الكامل في ضعفاء الرجال، رقم الترجمة ۱۱۴۱، ج ۵، ص ۵۰۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सलात के मा'ना हैं रहमत या त-लबे रहमत, जब इस का फ़ाइल (या'नी करने वाला) रब (عَزَّوَجَلَّ) हो तो (सलात) ब मा'ना रहमत होती है और फ़ाइल जब बन्दे हों तो ब मा'ना त-लबे रहमत। इस्लाम में एक नेकी का बदला कम अज़ कम दस गुना

है। ख़याल रहे कि बन्दा अपनी हैसियत के लाइक़ दुरूद शरीफ़ पढ़ता है मगर रब तअ़ाला अपनी शान के लाइक़ उस पर रहमतें उतारता है जो बन्दे के ख़याल व गुमान से वरा (या'नी बुलन्द) है।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 2, स. 97, 98)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हद्दीस (3)

दस रहमतें

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम का फ़रमाने मुश्कबार है :

“مَنْ صَلَّى عَلَيَّ وَاحِدَةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ عَشْرَ صَلَوَاتٍ وَحُطَّتْ عَنْهُ عَشْرُ خَطِيئَاتٍ وَرُفِعَتْ لَهُ عَشْرُ دَرَجَاتٍ”  
या 'नी जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा, अल्लाह तअ़ाला उस पर दस रहमतें भेजेगा और उस के दस गुनाह मुआफ़ किये जाएंगे और उस के दस द-रजे बुलन्द किये जाएंगे।”

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الصلاة باب الصلاة على النبي ﷺ، الحديث ۹۲۲، ج ۱، ص ۱۸۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि एक दुरूदे पाक में तीन फ़ाएदे हैं। दस रहमतें, दस गुनाहों की मुआफ़ी और दस द-रजों की बुलन्दी।

(مراۃ المناجیح، کتاب الصلاة، باب الصلاة على النبي ﷺ، ج ۲، ص ۱۰۰)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## हदीस (4) निय्यत की अहम्मिय्यत

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ-मरे फ़ारूक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुजूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “ **إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ** ” या'नी आ'माल का दारो मदार **निय्यतों** पर है ।”

(صحيح البخارى، كتاب بدء الوحي، باب كيف كان بدء الوحي، الحديث 1، ص 1)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस हदीस से मा'लूम हुवा कि आ'माल का सवाब निय्यत पर ही है, बिगैर निय्यत किसी अमल पर सवाब का **इस्तिह़काक़** (या'नी हक़) नहीं । **आ'माल** अमल की जम्अ है और इस का इत्लाक़ आ'जा, ज़बान और दिल तीनों के अफ़अाल पर होता है और यहां आ'माल से मुराद आ'माले सालिहा (या'नी नेक आ'माल) और मुबाह (या'नी जाइज़) अफ़अाल हैं । और **निय्यत** लु-ग़वी तौर पर दिल के पुख़्ता इरादे को कहते हैं और शरअन इबादात के इरादे को निय्यत कहा जाता है । इबादात की दो किस्में हैं :

**(1) मक्सूदा :** जैसे नमाज़, रोज़ा कि इन से मक्सूद हुसूले सवाब है इन्हें अगर बिगैर निय्यत अदा किया जाए तो येह सहीह न होंगे इस लिये कि इन से मक्सूद सवाब था और जब सवाब मफ़कूद हो गया तो इस की वजह से अस्ल शै ही अदा न होगी ।

**(2) ग़ैर मक़सूदा :** वोह जो दूसरी इबादतों के लिये ज़रीआ हों जैसे नमाज़ के लिये चलना, वुज़ू, गुस्ल वगैरा। इन इबादाते ग़ैर मक़सूदा को अगर कोई निय्यते इबादत के साथ करेगा तो उसे सवाब मिलेगा और अगर बिना निय्यत करेगा तो सवाब नहीं मिलेगा मगर इन का ज़रीआ या वसीला बनना अब भी दुरुस्त होगा और इन से नमाज़ सहीह हो जाएगी। (माखूज़ अज़ नुज़हतुल क़ारी शर्हे सहीहुल बुख़ारी, जि. 1, स. 226)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** एक अमल में जितनी निय्यतें होंगी उतनी नेकियों का सवाब मिलेगा, म-सलन मोहताज क़राबत दार की मदद करने में अगर निय्यत फ़क़त **लि वजिहल्लाह** (या'नी अल्लाह के लिये) देने की होगी तो एक निय्यत का सवाब पाएगा और अगर सिलए रेहूमी की निय्यत भी करेगा तो दोहरा सवाब पाएगा। (اشعة اللمعات، ج 1، ص 36) **इसी** तरह मस्जिद में नमाज़ के लिये जाना भी एक अमल है इस में बहुत सी निय्यतें की जा सकती हैं, इमामे अहले सुन्नत शाह **मौलाना अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 5 सफ़हा 673 में इस के लिये चालीस निय्यतें बयान कीं और फ़रमाया : “बेशक जो इल्मे निय्यत जानता है एक एक फ़े'ल को अपने लिये कई कई नेकियां कर सकता है।” (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 5, स. 673)

बल्कि मुबाह कामों में भी अच्छी निय्यत करने से सवाब मिलेगा, म-सलन खुशबू लगाने में इत्तिबाए सुन्नत, ता'जीमे मस्जिद, फ़रहते



दिमाग़ और अपने इस्लामी भाइयों से ना पसन्दीदा बू दूर करने की निय्यतें हों तो हर निय्यत का अलग सवाब होगा। (اشعة المصائب، ج 1، ص 32)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

## खुलूसे निय्यत

हज़रते सय्यिदुना मालिक बिन दीनार عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّارِ दिमश्क में मुक़ीम थे और हज़रते सय्यिदुना अमीरे मुअ़ाबिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की तय्यार कर्दा मस्जिद में ए'तिकाफ़ किया करते थे। एक मर्तबा उन के दिल में ख़याल आया कि कोई ऐसी सूरत पैदा हो जाए कि मुझे इस मस्जिद का मु-तवल्ली (या'नी इन्तिज़ाम संभालने वाला) बना दिया जाए। चुनान्चे आप ने ए'तिकाफ़ में इज़ाफ़ा कर दिया और इतनी कसरत से नमाज़ें पढ़ीं कि हमा वक़्त नमाज़ में मशग़ूल देखे जाते। लेकिन किसी ने आप की तरफ़ तवज्जोह नहीं की। एक साल इसी तरह गुज़र गया। एक मर्तबा आप मस्जिद से बाहर आए तो निदाए ग़ैबी आई : “**ऐ मालिक ! तुझे अब तौबा करनी चाहिये ।**” येह सुन कर आप को एक साल तक अपनी खुद ग़-रज़ाना इबादत पर शदीद रन्ज व शरमिन्दगी हुई और आप अपने क़ल्ब को रिया से ख़ाली कर के खुलूसे निय्यत के साथ सारी रात इबादत में मशग़ूल रहे।

सुबह के वक़्त मस्जिद के दरवाजे पर लोगों का एक मज्मअ मौजूद था, और लोग आपस में कह रहे थे कि “मस्जिद का इन्तिज़ाम ठीक नहीं है लिहाज़ा इसी शख़्स को मु-तवल्ली बना दिया जाए और

तमाम इन्तिज़ामी उमूर इस के सिपुर्द कर दिये जाएं।” सारा मज्मअ इस बात पर मुत्तफ़िक् हो कर आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّارِ के पास पहुंचा और आप के नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बा’द उन्होंने ने आप से अर्ज़ की, कि “हम बाहमी तौर पर किये गए मुत्तफ़िक् फैसले से आप को मस्जिद का मु-तवल्ली बनाना चाहते हैं।” आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّارِ ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अर्ज़ की : “ऐ अल्लाह ! मैं एक साल तक रियाकाराना इबादत में इस लिये मशगूल रहा कि मुझे मस्जिद की तौलियत हासिल हो जाए मगर ऐसा न हुवा अब जब कि मैं सिदके दिल से तेरी इबादत में मशगूल हुवा तो तमाम लोग मुझे मु-तवल्ली बनाने आ पहुंचे और मेरे ऊपर येह बार डालना चाहते हैं, लेकिन मैं तेरी अ-जमत की क़सम खाता हूं कि मैं न तो अब तो तौलियत क़बूल करूंगा और न मस्जिद से बाहर निकलूंगा।” येह कह कर फिर इबादत में मशगूल हो गए।

(तذكرة الاولياء، باب چهارم، ذکر مالک بن دینار رحمۃ اللہ تعالیٰ علیہ، ج ۱، ص ۴۸، ۴۹)

**मदीना :** अच्छी अच्छी निय्यतों से मु-तअल्लिक़ रहनुमाई के लिये, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ का सुन्नतों भरा केसिट बयान “निय्यत का फल” और निय्यतों से मु-अल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा कार्ड या पेम्फ़लेट मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन हासिल फ़रमाएं।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

## हद्दीस (5) निय्यत अमल से बेहतर है

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन सा'द رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुजूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने दिलकुशा है : “ نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ ” या 'नी मुसल्मान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है ।”

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث: ٥٩٤٢، ج ٦، ص ١٨٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अलिय्युल मुर्तजा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ ने इर्शाद फ़रमाया : “बन्दे को अच्छी निय्यत पर वोह इन्आमात दिये जाते हैं जो अच्छे अमल पर भी नहीं दिये जाते क्यूं कि निय्यत में रियाकारी नहीं होती ।”

(الزّواجر عن اقتراف الكبائر، الكبيرة الثانية، باب الشرك الاصغر وهو الرياء، ج ١، ص ٧٥)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## निय्यत का फल

बनी इस्राईल का एक शख्स कहूत साली में रैत के एक टीले के पास से गुज़रा । उस ने दिल में सोचा कि अगर येह रैत ग़ल्ला होती तो मैं इसे लोगों में तक्सीम कर देता । इस पर अल्लाह तआला ने उन के नबी عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ व्ह्य भेजी कि उस से फ़रमाएं कि अल्लाह तआला ने तुम्हारा स-दका क़बूल कर लिया

और तेरी अच्छी निय्यत के बदले में उस टीले के ब क़दर ग़ल्ला  
स-दका करने का सवाब दिया ।

(احياء العلوم، كتاب النية والاحلاص، ج ٥، ص ٨٨)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

## हदीस (6) हुसूले इल्म की तरगीब

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह

عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब

أَطْبِقُوا الْعِلْمَ وَلَوْ بِالصَّيْنِ: “ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

या 'नी इल्म हासिल करो अगर्चे तुम्हें चीन जाना पड़े ।”

(شعب الإيمان، باب في طلب العلم، الحديث: ١٦٦٣، ج ٢، ص ٢٥٤)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस (हदीसे पाक) से इल्मे दीन

की बे इन्तिहा अहम्मियत साबित होती है कि उस ज़माने में जब

कि हवाई जहाज़, रेल और मोटर नहीं थे, अरब से मुल्के चीन

पहुंचना कितना मुशकिल काम था मगर रहमते आलम, नूरे मुजस्सम

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमा रहे हैं कि अगर्चे तुम को अरब से

मुल्के चीन जाना पड़े लेकिन इल्मे दीन ज़रूर हासिल करो इस से

ग़फ़लत हरगिज़ न बरतो ।

(इल्म और उ-लमा, स. 33)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

## मदीनतुल मुनव्वरह से दिमश्क़ का सफ़र

हज़रते सय्यिदुना कसीर बिन क़ैस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि मैं हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के साथ दिमश्क़ की मस्जिद में बैठा था तो एक आदमी ने आ कर कहा : “ए अबू दरदा ! बेशक मैं ताजदारो रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के शहर मदीनए तय्यिबा से यह सुन कर आया हूं कि आप के पास कोई हदीस है जिसे आप रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से रिवायत करते हैं और मैं किसी दूसरे काम के लिये नहीं आया हूं।” हज़रते अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने कहा कि मैं ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ को फ़रमाते हुए सुना है कि “जो शख्स इल्म (दीन) हासिल करने के लिये सफ़र करता है तो खुदा तआला उसे जन्नत के रास्तों में से एक रास्ते पर चलाता है और तालिबे इल्म की रिज़ा हासिल करने के लिये फ़िरिश्ते अपने परों को बिछा देते हैं और हर वोह चीज़ जो आस्मान व ज़मीन में है यहां तक कि मछलियां पानी के अन्दर आलिम के लिये दुआए मग़िफ़रत करती हैं और आलिम की फ़ज़ीलत आबिद पर ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की फ़ज़ीलत सितारों पर, और उ-लमा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام के वारिस व जा नशीन हैं। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का तर्क दीनार व दिरहम नहीं हैं। उन्हों ने वरासत में सिर्फ़ इल्म छोड़ा है तो जिस ने इसे हासिल किया उस ने पूरा हिस्सा पाया।”

(सनन अबु दाउद, کتاب العلم، باب الحث على طلب العلم، الحديث ٣٦٤١، ج ٣، ص ٤٤٤)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिथ्या (दा'वते इस्लामी)

## हृदीस (7)

## बेहतरनी शख़्स

हज़रते सय्यिदुना उस्मान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि शहन्शाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुजूले सकीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया :  
 “خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ”  
 कुरआन को सीखा और दूसरों को सिखाया।”

(صحيح البخاري، كتاب فضائل القرآن، باب خيركم... الخ، الحديث ٥٠٢٧، ج ٣، ص ٤١٠)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** कुरआन सीखने सिखाने में बहुत वुस्अत है, बच्चों को कुरआन के हिज्जे सिखाना, क़ारी साहिबान का तज्वीद सीखना सिखाना, उ-लमाए किराम का कुरआनी अहकाम ब ज़रीअए हृदीस व फ़िक्ह सीखना सिखाना, सूफ़ियाए किराम का असरार व रुमूजे कुरआन ब सिल्सिलए तरीक़त सीखना सिखाना सब कुरआन ही की ता'लीम है। सिर्फ़ अल्फ़ाजे कुरआन की ता'लीम मुराद नहीं।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 3, स. 217)

تَبْلِيغِي كُورْآنُو سُنُنَتِ كِي اِآلَمَغِيرِ غَيْرِ سِيْيَاسِي  
 तहरीक दा 'वते इस्लामी के तहूत कुरआने पाक की ता'लीमात को अ़ाम करने के लिये अन्दरून व बैरूने मुल्क हिफ़ज़ो नाज़िरा के ला ता'दाद मदारिस बनाम “मद्र-सतुल मदीना” काइम हैं। पाकिस्तान में हज़ारों म-दनी मुन्ने और म-दनी मुन्नियों को हिफ़ज़ो नाज़िरा की मुफ़्त

ता'लीम दी जा रही है। इसी तरह मुख़्तलिफ़ मसाजिद वग़ैरा में उमूमन बा'द नमाज़े इशा हज़ारहा मद्र-सतुल मदीना बालिग़ान की तरकीब होती है जिन में बड़ी उम्र के इस्लामी भाई सहीह मख़ारिज से हुरूफ़ की दुरुस्त अदाएगी के साथ कुरआने करीम सीखते और दुआएं याद करते, नमाज़ें वग़ैरा दुरुस्त करते और सुन्नतों की ता'लीम मुफ़्त हासिल करते हैं। इलावा अर्ज़ी दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में अक्सर घरों के अन्दर तक़रीबन रोज़ाना हज़ारों मदारिस बनाम मद्र-सतुल मदीना (बराए बालिग़ात) भी लगाए जाते हैं जिन में इस्लामी बहनें कुरआने पाक, नमाज़ और सुन्नतों की मुफ़्त ता'लीम पातीं और दुआएं याद करती हैं। शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ के जज़्बात येह हैं :

येही है आरज़ू ता'लीमे कुरआं आम हो जाए

तिलावत करना सुब्हो शाम मेरा काम हो जाए

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

**ह़दीस (8) इल्म हासिल करना फ़र्ज़ है**

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद

फ़रमाते हैं : “ **طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ** ” इल्म का हासिल करना हर मुसल्मान मर्द (व औरत) पर **फ़र्ज़** है ।”

(شعب الإيمان، باب في طلب العلم، الحديث: ١٦٦٥، ج ٢، ص ٢٥٤)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** हर मुसल्मान मर्द औरत पर इल्म सीखना फ़र्ज़ है, (यहां) इल्म से ब क़दरे ज़रूरत शर-ई मसाइल मुराद हैं लिहाज़ा रोज़े नमाज़ के मसाइले ज़रूरिय्या सीखना **हर मुसल्मान** पर फ़र्ज़, हैज़ व निफ़ास के ज़रूरी मसाइल सीखना **हर औरत** पर, तिजारत के मसाइल सीखना **हर ताजिर** पर, हज़ के मसाइल सीखना **हज़** को जाने वाले पर ऐन **फ़र्ज़** हैं लेकिन दीन का पूरा **आलिम** बनना फ़र्ज़े किफ़ाय़ा कि अगर शहर में एक ने अदा कर दिया तो सब बरी हो गए ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 202)

**शैख़े तरीक़त** अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि **دامت برکاتهم العالیه** अपने एक मक्तूब में लिखते हैं : “**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** अफ़सोस ! आज कल सिर्फ़ व सिर्फ़ दुन्यावी उलूम ही की तरफ़ हमारी अक्सरिय्यत का रुजहान है । इल्मे दीन की तरफ़ बहुत ही कम मैलान है । **हदीसे पाक** में है : **طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلَى كُلِّ مُسْلِمٍ** . **या'नी** इल्म का त़लब करना हर मुसल्मान मर्द (व औरत) पर **फ़र्ज़** है ।

(سنن ابن ماجه ج ١ ص ١٤٦ حديث ٢٢٤)



हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान  
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने जो कुछ फ़रमाया, इस का आसान लफ़्ज़ों में मुख़्तसरन  
 खुलासा अर्ज़ करने की कोशिश करता हूँ। सब में अक्वलीन व अहम  
 तरीन फ़र्ज़ यह है कि बुन्यादी अक्वाइद का इल्म हासिल करे। जिस से  
 आदमी सहीहुल अक्वीदा सुन्नी बनता है और जिन के इन्कार व  
 मुख़ा-लफ़त से काफ़िर या गुमराह हो जाता है। इस के बा'द मसाइले  
 नमाज़ या'नी इस के फ़राइज़ व शराइत व मुफ़िसदात (या'नी नमाज़ तोड़ने  
 वाली चीज़ें) सीखे ताकि नमाज़ सहीह तौर पर अदा कर सके। फिर जब  
 र-मज़ानुल मुबारक की तशरीफ़ आ-वरी हो तो रोज़ों के मसाइल,  
 मालिके निसाबे नामी (या'नी हक्कीकतन या हुक्मन बढ़ने वाले माल के  
 निसाब का मालिक) हो जाए तो ज़कात के मसाइल, साहिबे इस्तिताअत  
 हो तो मसाइले हज़, निकाह करना चाहे तो इस के ज़रूरी मसाइल,  
 ताजिर हो तो ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल, मुज़ारेअ या'नी काश्त-कार  
 (व ज़मीन दार) पर खेती बाड़ी के मसाइल, मुलाज़िम बनने और  
 मुलाज़िम रखने वाले पर इजारा के मसाइल। وَعَلَىٰ هَٰذَا الْقِيَاسِ (या'नी और  
 इसी पर क़ियास करते हुए) हर मुसल्मान अक्विल व बालिग़ मर्द व  
 औरत पर उस की मौजूदा हालत के मुताबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़  
 ऐन है। इसी तरह हर एक के लिये मसाइले हलाल व हराम भी सीखना  
 फ़र्ज़ है। नीज़ मसाइले क़ल्ब (बातिनी मसाइल) या'नी फ़राइज़े क़ल्बिया

(बातिनी फ़राइज़) म-सलन अज़िज़ी व इज़्लास और तवक्कुल वगैरहा और इन को हासिल करने का तरीका और बातिनी गुनाह म-सलन तकब्बुर, रियाकारी, हसद वगैरहा और इन का इलाज सीखना हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है।”

(माखूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 623, 624)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

## हदीस (9) रिज़क़ का ज़ामिन

हज़रते सय्यिदुना ज़ियाद बिन हारिस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ تَكَفَّلَ اللَّهُ لَهُ بِرِزْقِهِ : “ का फ़रमाने ज़ीशान है : या 'नी जो शख्स त-लबे इल्म में रहता है, अल्लाह तआला उस के रिज़क़ का ज़ामिन है।”

(तारीख़ बग़दाद, रफ़: १०३०, ज ३, स ३९८)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआला तालिबे इल्म को ख़ास तौर पर ऐसे ज़रीए से रिज़क़ अता करेगा कि उस का गुमान भी न होगा, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** । लिहाज़ा तालिबुल इल्म को चाहिये कि अपने रब ही पर तवक्कुल करे और थोड़े खाने और कम लिबास पर क़नाअत करे । इमाम मालिक عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْخَالِقِ फ़रमाते हैं : जो फ़क़्र पर राज़ी न होगा तो उसे उस का मत्लूब या'नी इल्म न मिल सकेगा ।

(فيض القدير، تحت الحديث ٨٨٣٨، ج ٦، ص ٢٢٨، ملخصاً)

फ़िक्हे ह-नफ़ी के अज़ीम पेशवा इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा  
 رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के होन्हार शागिर्द इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने जब  
 इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की शागिर्दी इख़्तियार की तो आप माली  
 तौर पर ज़बू हाली का शिकार थे। लेकिन आप ने हिम्मत न हारी और  
 मुसल्लसल इल्म हासिल करते रहे और आख़िरे कार फ़िक्हे ह-नफ़ी के  
 इमाम कहलाए।

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

**हब्दीश (10) राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ का मुसाफ़िर**

हज़रते सय्यिदुना अनस रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ  
 के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ  
 का फ़रमाने अ-ज़मत निशान है : “ مَنْ خَرَجَ فِي طَلَبِ الْعِلْمِ فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ حَتَّى يَرْجِعَ ”  
 या'नी जो शख़्स त-लबे इल्म के लिये घर से निकला, तो जब तक वापस न  
 हो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की राह में है।”

(جامع الترمذي، ابواب العلم، باب فضل طلب العلم، الحديث ٢٦٥٦، ج ٤، ص ٢٩٥)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जो कोई मस्अला पूछने के लिये  
 अपने घर से या इल्म की जुस्त-जू में अपने वतन से उ-लमा के पास  
 गया वोह भी मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह (या'नी राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में  
 जिहाद करने वाले की तरह) है। गाज़ी की तरह घर लौटने तक उस का

सारा वक़्त और ह-र-कत इबादत होगी ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 203)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

**सीखने के लिये सफ़र करना बुजुर्गों की सुन्नत है**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन इल्म हासिल करने के लिये सफ़र करना बुजुर्गाने दीन की सुन्नत है । और वोह नुफ़से कुदसिय्या तो उस कठिन दौर में इल्म हासिल करने के लिये सफ़र करते थे जब सफ़र ऊंट पर, घोड़े पर या पैदल किया जाता था । और मन्ज़िल तक पहुंचने में कई रोज़ और कभी कभी कई माह सफ़र हो जाते थे । जब कि आज कल तो महीनों का सफ़र दिनों में और दिनों का सफ़र घन्टों में तै हो जाता है । उस दौर में इस क़दर दुश्वारियां होने के बा वुजूद लोगों में जज़्बा था कि वोह राहे खुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करते थे । और सुन्नतों के रास्ते में आने वाली हर तक्लीफ़ को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त कर लेते थे । मगर अफ़सोस ! आज हालां कि सफ़र करना निहायत ही आसान हो चुका है । फिर भी इस आसानी से फ़ाएदा उठाने के लिये कोई तय्यार नहीं । हां ! हुसूले दुन्या के लिये इस आसानी का पूरा पूरा फ़ाएदा उठाया जाता है । दौलत कमाने के लिये लोग हज़ारों मीलों का सफ़र तै कर के न जाने कहां कहां पहुंच जाते हैं । माल कमाने

की गरज़ से मां बाप, बीवी बच्चों सब से फुरक़त और जुदाई गवारा कर लेते हैं। ख़ूब कमाते हैं, बैंक बेलेन्स बढ़ाते हैं, ख़ूब खुश होते हैं, हर वक़्त मालो दौलत के ढेर के सुहाने सपने देखते रहते हैं, दौलत बढ़ाने की नई नई तरकीबें सोचते रहते हैं। शबो रोज़ माल ही के जाल में फंसे रहते हैं। आह! हुब्बे माल में हर एक आज सफ़र करने के लिये बे क़रार और सर धड़ की बाज़ी लगा देने के लिये तय्यार नज़र आता है। इस्लाम की सर बुलन्दी के लिये नेकी की दा'वत पेश करने के लिये कौन अपने घर से निकले। आह! सद आह!

वोह मर्दे मुजाहिद नज़र आता नहीं मुझ को

हो जिस की रगो पै में फ़क़त मस्तिये किरदार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ! दा'वते इस्लामी

के म-दनी क़ाफ़िले क़र्या ब क़र्या गाउं ब गाउं, मुल्क ब मुल्क 3 दिन, 12 दिन, 30 दिन और 12 माह के लिये राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में सफ़र करते रहते हैं। हमें चाहिये कि अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये आशिक़ाने रसूल के हमराह दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र को अपना मा'मूल बना लें।

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَي مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

## हदीस (11) गुनाहों का कफ़ारा

हज़रते सय्यिदुना सख़िब्रह रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि हुजूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक وَسَلَّم عَلَيْهِ وَالْهَيْهَ وَسَلَّم का फ़रमाने मग़िफ़रत निशान है : “ مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ كَانَ كَفَّارَةً لِمَا مَضَى ” या 'नी जो शख़्स इल्म त़लब करता है, तो येह उस के गुज़श्ता गुनाहों का कफ़ारा है ।”

(جامع الترمذي، ابواب العلم، باب فضل طلب العلم، الحديث ٢٦٥٧، ج ٤، ص ٢٩٥)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! त़ालिबे इल्म से सगीरा गुनाह (उसी तरह) मुआफ़ हो जाते हैं जैसे वुजू नमाज़ वगैरा इबादात से, लिहाज़ा इस का म़ल्लब येह नहीं है कि त़ालिबे इल्म जो गुनाह चाहे करे । या (इस हदीस का) म़ल्लब येह है कि अल्लाह त़आला निय्यते ख़ैर से इल्म त़लब करने वालों को गुनाहों से बचने और गुज़श्ता गुनाहों का कफ़ारा अदा करने की तौफ़ीक़ देता है । (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 203)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## हदीस (12) दीन की समझ

हज़रते सय्यिदुना मुआविया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ : “ مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ ” ने इशाद फ़रमाया :

या 'नी अल्लाह तआला जिस के साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है, उस को दीन की समझ अता फ़रमाता है।”

(صحيح البخاري، كتاب العلم باب من يرد الله به خيرا... إلخ، الحديث: ٧١، ج ١، ص ٤٣)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़िक्ह के शर-ई मा'ना** यह है कि अहकामे शरइय्या फ़रइय्या को उन के तफ़सीली दलाइल से जानना। (इस हदीस के) मा'ना यह हुए कि **अल्लाह** जिसे तमाम दुन्या की भलाई अता फ़रमाना चाहता है उसे फ़कीह बनाता है। (माखूज़ अज़ नुज़हतुल कारी शर्हें सहीहुल बुख़ारी, जि. 1, स. 424) या'नी उसे इल्म, दीनी समझ और दानाई बख़्शाता है। ख़याल रहे कि फ़िक्हे ज़ाहिरी, शरीअत है और फ़िक्हे बातिनी, तरीक़त और हकीक़त, येह हदीस दोनों को शामिल है। इस (हदीस) से दो मस्अले साबित हुए एक येह कि कुरआनो हदीस के तरजमे और अल्फ़ाज़ रट लेना इल्मे दीन नहीं बल्कि इन का समझना **इल्मे दीन** है। येही मुशिकल है। इसी के लिये फु-क़हा की तक्लीद की जाती है। इसी वजह से तमाम **मुफ़स्सरीन व मुहद्दिसीन आइम्माए मुज्ताहिदीन** के मुक़ल्लिद हुए अपनी हदीस दानी पर नाज़ां न हुए। दूसरे येह कि हदीस व कुरआन का इल्म कमाल नहीं, बल्कि इन का समझना कमाल है। **आलिमे दीन** वोह है जिस की ज़बान पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमान हो और दिल में इन का फ़ैज़ान।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 187)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इल्मे दीन व उ-लमाए हक्का के फ़ज़ाइल बे शुमार हैं मगर अफ़सोस कि आज कल इल्मे दीन की तरफ़ हमारा रुजहान न होने के बराबर है । अपने होन्हार बच्चों को दुन्यवी उलूम व फुनून तो ख़ूब सिखाए जाते हैं मगर सुन्नतें सिखाने की तरफ़ तवज्जोह नहीं की जाती । अगर बच्चा ज़रा ज़हीन हो तो उस के वालिदैन के दिल में उसे डॉक्टर, इन्जीनियर, प्रोफ़ेसर, कम्प्यूटर प्रोग्रामर बनाने की ख़्वाहिश अंगड़ाइयां लेने लगती है और इस ख़्वाहिश की तक्मील के लिये उस की दीनी तरबियत से मुंह मोड़ कर मग़रिबी तहज़ीब के नुमायन्दा इदारों के मख़्लूत माहोल में ता'लीम दिलवाने में कोई अ़र महसूस नहीं की जाती बल्कि उसे “आ'ला ता'लीम” की ख़ातिर कुफ़ार के हवाले करने से भी दरेग़ नहीं किया जाता । और अगर बच्चा कुन्द ज़ेहन है या शरारती है या मा'ज़ूर है तो जान छुड़ाने के लिये उसे किसी दारुल उलूम या जामिआ में दाख़िला दिला दिया जाता है । ब ज़ाहिर इस की वजह येही नज़र आती है कि वालिदैन की अक्सरियत का मत्महे नज़र महज़ दुन्यवी माल व जाह होती है, उख़वी मरातिब का हुसूल उन के पेशे नज़र नहीं होता । वालिदैन को चाहिये कि अपनी औलाद को अ़लिम बनाएं ताकि वोह अ़लिम बनने के बा'द मुआ-शरे में लाइके तक्लीद किरदार का मालिक बने और दूसरों को इल्मे दीन भी सिखाए ।



**मदीना :** الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के ज़ेरे इन्तिज़ाम कसीर जामिआत बनाम “जामिअतुल मदीना” काइम हैं। इन के ज़रीए ला ता'दाद इस्लामी भाइयों को (हस्बे ज़रूरत क़ियाम व त़आम की सहूलत के साथ) दर्से निज़ामी (या'नी अ़ालिम कोर्स) और इस्लामी बहनों को “अ़ालिमा कोर्स” की मुफ़्त ता'लीम दी जाती है। इस के साथ साथ जामिआत में ऐसा म-दनी माहोल फ़राहम करने की कोशिश की जाती है कि यहां से पढ़ने वाले इल्म व अ़मल का पैकर बन कर निकलें। आप भी अपनी औलाद को इल्म व अ़मल सिखाने के लिये जामिअतुल मदीना में पढ़ाइये।

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

### हद्दीस (13) नजात का ज़रीआ

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि शहन्शाहे मदीना, करारे क़ल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुजूले सकीना, फ़ैज गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमाते हैं : “ مَنْ خَامَشَ رَجَا ”

(جامع الترمذي، ابواب صفة القيامة، الحديث ٢٥٠٩، ج ٤، ص ٢٢٥)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** इस फ़रमान का एक मत्लब येह भी हो सकता है कि जिस ने ख़ामोशी इख़्तियार की वोह दोनों जहां की बलाओं से महफूज़ रहा। हुज्जतुल इस्लाम इमाम मुहम्मद

ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : “कलाम चार किस्म के हैं, (एक) ख़ालिस नुक़सान देह, (दूसरा) ख़ालिस मुफ़ीद, (तीसरा) नुक़सान देह भी और मुफ़ीद भी, (चौथा) न नुक़सान देह और न मुफ़ीद । ख़ालिस नुक़सान देह से हमेशा परहेज़ ज़रूरी है । ख़ालिस मुफ़ीद कलाम ज़रूर करे । जो कलाम नुक़सान देह भी हो और मुफ़ीद भी उस के बोलने में एह्तियात् करे, बेहतर है कि न बोले और चौथी किस्म के कलाम में वक़्त जाएअ करना है । इन कलामों में इम्तियाज़ करना मुशिकल है लिहाज़ा ख़ामोशी बेहतर है ।”

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 464)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

### बोलने का नुक़सान

एक मर्तबा बादशाह बहराम किसी दरख़्त के नीचे बैठा हुवा था कि उसे किसी परिन्दे के बोलने की आवाज़ सुनाई दी । उस ने परिन्दे की तरफ़ तीर फेंका जो उसे जा लगा (और वोह हलाक हो गया) । बहराम ने कहा : “जबान की हिफ़ाज़त इन्सान और परिन्दे दोनों के लिये मुफ़ीद है कि अगर येह न बोलता तो इस की जान बच जाती ।”

(المستطرف فى كل فن مستطرف، الباب الثالث عشر، ج ١، ص ١٤٧)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

## हद्दीस (14) रहनुमाई की फ़जीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू मस्क़द अन्सारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूल अकरम शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने खुशबूदार है :

“ يَا نَبِيَّ مَنْ دَلَّ عَلَى خَيْرٍ فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِ فَاعِلِهِ ” जो शख्स किसी को नेकी का रास्ता बताएगा, तो उसे भी उतना ही सवाब मिलेगा, जितना कि उस नेकी पर अमल करने वाले को ।”

(صحيح مسلم، كتاب الإمامة، باب فضل اعانة الغازي... الخ، الحديث 1893، ص 100)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नेकी करने वाला, कराने वाला, बताने वाला, मश्वरा देने वाला सब सवाब के मुस्तहिक़ हैं । (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 194) सरकारे दो आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसम ! अगर अल्लाह तआला तुम्हारे ज़रीए किसी एक को भी हिदायत दे दे तो येह तुम्हारे लिये सुख़ उंटों से बेहतर है ।”

(سنن ابو داؤد، الحديث 3661، ج 3، ص 350)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## हद्दीस (15) नेकी की दा'वत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا रिवायत करते हैं कि शहन्शाहे मदीना, करारे कल्बो सीना, साहिबे मुअत्तर पसीना, बाइसे नुजूले सकीना, फैज गन्जीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद

फ़रमाते हैं : “يَلْعَنُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً” या 'नी मेरी तरफ़ से पहुंचा दो, अगर्चे एक ही आयत हो ।” (صحيح البخاري، كتاب احاديث الانبياء، باب ما ذكر عن بنى اسرائيل، الحديث ٤٦٦١، ج ٢، ص ٤٦٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आयत के मा'ना अलामत और निशानी के हैं। इस लिहाज़ से हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मो 'जिज़ात, अहादीस, अहकाम, कुरआनी आयात सब आयतें हैं। इस्तिलाह में कुरआन के उस जुम्ले को आयत कहा जाता है जिस का मुस्तक़िल नाम न हो। नाम वाले मज़्मून को सूरात कहते हैं। यहां आयत से लु-ग़वी मा'ना मुराद हैं या'नी जिसे कोई मस्अला या हदीस या कुरआन शरीफ़ की आयत याद हो वोह दूसरे को पहुंचा दे। तब्लीग़ सिर्फ़ उ-लमा دَامَتْ قُبُورُهُمْ पर फ़र्ज़ नहीं, हर मुसल्मान ब क़दरे इल्म मुबल्लिग़ है और हो सकता है कि आयत के इस्तिलाही मा'ना मुराद हों और इस से आयत के अल्फ़ाज़ मा'ना मत्लब मसाइल सब मुराद हों या'नी जिसे एक आयत हिफ़ज़ हो उस के मु-तअल्लिक़ कुछ मसाइल मा'लूम हों लोगों तक पहुंचाए, तब्लीग़ भी बड़ी अहम इबादत है।

(मिरआतुल मनाज़ीह, जि. 1, स. 185)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि हम जो कुछ भी सुन्तें वग़ैरा जानते हैं उसे अहूसन तरीक़े से दूसरे इस्लामी भाइयों तक पहुंचाना चाहिये। हां आयाते मुक़द्दसा की तफ़्सीर और अहादीसे मुबा-रका की शर्ह, अ़ाम इस्लामी भाई अपनी तरफ़ से नहीं कर

सकता, येह मुफ़स्सरीन व मुहदिसीने किराम का काम है। ताहम नेकी की दा'वत देने वाले मुबल्लिग़ के लिये येह बात निहायत ही ज़रूरी है कि वोह इल्म हासिल करता रहे और इस मस्रूफ़ियत के दौर में हुसूले इल्म के आसान ज़राएअ में से एक ज़रीआ तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की अलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआत में शिकत भी है।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

## हदीस (16) दुआ की अहम्मियत

हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो अलम के मालिको मुख्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया : “الدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ يَا نَبِيَّ دُأَا إِبَادَتِ كَا مَغْجُ هَا”

(جامع الترمذي، كتاب الدعوات، الحديث: ۳۳۸۲، ج ۵، ص ۲۴۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! दुआ इबादत का रुक्ने आ'ला है। दुआ इबादत का मग़्ज इस ए'तिबार से है कि दुआ मांगने वाला हर एक से कनारा कर के अपने रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मुनाजात करता है।

(فيض القدير، ج ۳، ص ۷۲)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

## ह़दीस (17) दुआ बला को टाल देती है

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शादि फ़रमाते हैं : “الدُّعَاءُ يَرُدُّ الْبَلَاءَ” या 'नी दुआ बला को टाल देती है ।”

(الجامع الصغير، للسيوطي، الحديث: ٤٢٦٥، ص ٢٥٩)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** दुआ के दो फ़ाएदे हैं एक येह कि इस की ब-र-कत से आई बला टल जाती है दूसरे येह कि आने वाली बला रुक जाती है । लिहाज़ा फ़क़त बला आने पर ही दुआ न की जाए बल्कि हर वक़्त दुआ मांगनी चाहिये, शायद कोई बला आने वाली हो जो इस दुआ से रुक जाए । (मिरआतुल मनाजीह, जि. 3, स. 295)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### गैबी मदद

दौरे न-बवी में एक ताजिर मदीनए पाक से शाम और शाम से मदीनतुल मुनव्वरह माल लाता और ले जाता था । एक बार अचानक एक डाकू घोड़े पर सुवार उस की राह में हाइल हुवा और ललकार कर ताजिर पर झपटा । ताजिर ने कहा : “अगर तू माल के लिये ऐसा कर रहा है तो माल ले ले और मुझे छोड़ दे ।” डाकू कहने लगा : “माल तो मैं लूंगा

ही, इस के साथ साथ तेरी जान भी लूंगा।” ताजिर ने उसे बहुत समझाया मगर वोह न माना। बिल आखिर ताजिर ने उस से इतनी मोहलत मांगी कि वुजू कर के नमाज़ पढ़े और कुछ दुआ करे। डाकू इस पर राजी हो गया। ताजिर ने वुजू कर के चार रकअत नमाज़ पढ़ी और हाथ उठा कर तीन बार येह दुआ की :

يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ तरजमा : ऐ महबबत फ़रमाने वाले,  
 يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ ऐ महबबत फ़रमाने वाले, ऐ महबबत  
 يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ फ़रमाने वाले, ऐ बुजुर्ग अर्श वाले,  
 يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ ऐ पैदा करने वाले, ऐ लौटाने वाले,  
 يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ ऐ अपने इरादे को पूरा करने वाले, मैं  
 يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ तुझ से सुवाल करता हूं तेरे उस नूर  
 يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ के तुफ़ैल जिस ने तेरे अर्श को भर  
 يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ दिया, मैं तुझ से सुवाल करता हूं तेरी  
 يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ उस कुदरत के तुफ़ैल जिस के साथ  
 يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدُ तू अपनी तमाम मख़्लूक पर कादिर  
 يَاوَدُّوُدُ يَاوَدُّوُدु है और तेरी उस रहमत के तुफ़ैल जो  
 يَاوَدُّوُدु يَاوَدُّوُدु हर शै को घेरे हुए है, तेरे सिवा कोई  
 يَاوَدُّوُدु يَاوَدُّوُدु मा'बूद नहीं है ऐ मदद फ़रमाने वाले  
 يَاوَدُّوُدु يَاوَدُّوُدु मेरी मदद फ़रमा।

जब वोह ताजिर दुआ से फ़ारिग़ हुवा तो देखा कि एक शख़्स सफ़ेद घोड़े पर सुवार, सब्ज़ कपड़ों में मल्बूस हाथ में नूरानी तलवार लिये हुए मौजूद है। वोह डाकू उस सुवार की तरफ़ बढ़ा। मगर क़रीब पहुंचते ही उस का एक नेज़ा खा कर ज़मीन पर आ रहा। वोह सुवार ताजिर के पास आया और कहा : “तुम इसे क़त्ल करो।” ताजिर ने पूछा : “आप कौन हैं ?” मैं ने अब तक किसी को क़त्ल नहीं किया और न इसे क़त्ल करना मेरे दिल को गवारा होगा।” उस सुवार ने पलट कर डाकू को मार डाला और ताजिर को बताया कि मैं ने तीसरे आस्मान के दरवाज़ों की खटपट सुनी जिस से जान लिया कि कोई वाकिअ हुवा है, और जब तुम ने दोबारा दुआ की आस्मान के दरवाजे इस ज़ोर से खुले कि उन से चिंगारियां निकलने लगीं। तुम्हारी सहबारा दुआ सुन कर हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام तशरीफ़ लाए और उन्होंने ने आवाज़ दी : “कौन है जो इस सितम रसीदा की मदद को जाए ?” तो मैं ने अपने रब से दुआ की : “या अल्लाह غُرُوْعَلْ ! इस के क़त्ल का काम मेरे ज़िम्मे फ़रमा।” येह बात याद रखो जो मुसीबत के वक़्त तुम्हारी येह दुआ पढ़ेगा चाहे कैसा ही हादिसा हो अल्लाह तआला उसे उस मुसीबत से महफूज़ रखेगा और उस की दाद रसी फ़रमाएगा।

(روض الرياحين، الحكاية الثامنة والتسعون بعد مئتين، ص २०६ و الاصابة في تمييز الصحابة، ج ७، ص ३१३)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)



## हदीस (18) धोका देने का नुक़सान

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम مَنْ عَشَّ فَلَيْسَ مِنَّا : “ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने इब्रत निशान है : “ या 'नी जो धोका देही करे वोह हम में से नहीं है ।”

(جامع الترمذي، باب البيوع، باب ماجاء في كراهية الغش، الحديث 1319، ج 3، ص 57)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस (हदीस) से मा'लूम हुवा कि तिजारती चीज़ में ऐब पैदा करना भी जुर्म है, और कुदरती पैदा शुदा ऐब को छुपाना भी जुर्म । देखो (नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने) बारिश से भीगे ग़ल्ले को छुपाना मिलावट ही में दाख़िल फ़रमाया । (मिरआतुल मनाजीह, जि. 4, स. 273) चुनान्चे हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मख़्ज़ने जूदो सख़ावत, पैकरे अ-ज़-मतो शराफ़त, महबूबे रब्बुल इज़्ज़त, मोहसिने इन्सानियत ग़ल्ले के एक ढेर पर गुज़रे तो अपना हाथ शरीफ़ उस में डाल दिया । आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उंगलियों ने उस में तरी पाई तो फ़रमाया : “ऐ ग़ल्ले वाले येह क्या ?” अर्ज़ की : “या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! इस पर बारिश पड़ गई ।” फ़रमाया : “तो गीले ग़ल्ले को तूने ढेर के ऊपर क्यूं न डाला ताकि इसे लोग देख लेते, जो धोका दे वोह हम में से नहीं । (صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب قول النبي ﷺ من غش فليس منا، الحديث 102، ص 65)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

## हद्दीस (19) तौबा की बुन्याद

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमाते हैं : “النَّدْمُ تَوْبَةٌ يَا 'نِي شَرْمِنْدَغِي تَوْبَا هَيْ ”

(سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث: ٤٢٥٢، ج ٤، ص ٤٩٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! चूँकि गुज़शता गुनाहों पर नदामत (या'नी शरमिन्दगी) तौबा का रुक्ने आ'ला है कि इस पर बाकी सारे अरकान मब्नी हैं, इस लिये सिर्फ़ नदामत का ज़िक्र फ़रमाया । जो किसी का हक़ मारने पर नादिम होगा तो हक़ अदा भी कर देगा, जो बे नमाज़ी होने पर शरमिन्दा होगा वोह गुज़शता छूटी नमाज़ें क़ज़ा भी कर लेगा । **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ**

(मिरआतुल मनाज़ीह, जि. 3, स. 379)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें चाहिये कि नदामते क़ल्बी को पाने के लिये इन म-दनी फूलों पर अमल करें :

(1) अल्लाह तआला की ने'मतों पर इस तरह ग़ौरो फ़िक्र करें कि “उस ने मुझे करोड़हा ने'मतों से नवाज़ा म-सलन मुझे पैदा किया.... मुझे ज़िन्दगी बाकी रखने के लिये सांसें अता फ़रमाई.... चलने के लिये पाउं दिये.... छूने के लिये हाथ दिये.... देखने के लिये आंखें अता फ़रमाई.... सुनने के लिये कान दिये.... सूंघने के लिये नाक दी....

बोलने के लिये ज़बान अ़ता की और करोड़हा ऐसी ने'मतें अ़ता फ़रमाई जिन पर आज तक मैं ने कभी ग़ौर नहीं किया ।” फिर अपने आप से यूं सुवाल करे : “क्या इतने एहसानात करने वाले रब तअ़ाला की ना फ़रमानी करना मुझे ज़ैब देता है ?”

(2) गुनाहों के अन्जाम के तौर पर जहन्नम में दिये जाने वाले अज़ाबे इलाही की शिद्दत को पेशे नज़र रखें म-सलन सरवरे दो अ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया :

﴿1﴾ “दोज़ख़ियों में सब से हलका अज़ाब जिस को होगा उसे आग के जूते पहनाए जाएंगे जिन से उस का दिमाग़ ख़ौलने लगेगा ।”

(صحيح مسلم، كتاب الايمان، باب اهون اهل النار عذابا، رقم 361، ص 134)

﴿2﴾ “अगर उस ज़र्द पानी का एक डोल जो दोज़ख़ियों के ज़ख़्मों से जारी होगा दुन्या में डाल दिया जाए तो दुन्या वाले बदबूदार हो जाएं ।”

(جامع الترمذی، كتاب صفة جهنم، باب ماجاء في صفة شراب اهل النار، الحديث 2093، ج 4، ص 263)

﴿3﴾ “दोज़ख़ में बुख़्ती (या'नी बड़े) ऊंट के बराबर सांप हैं, यह सांप एक मर्तबा किसी को काटे तो उस का दर्द और ज़हर चालीस बरस तक रहेगा । और दोज़ख़ में पालान बंधे हुए ख़च्चरों के मिस्ल बिच्छू हैं जिन के एक मर्तबा काटने का दर्द चालीस साल तक रहेगा ।”

(المسند للإمام احمد بن حنبل، حديث عبد الله بن الحارث، رقم 17729، ج 6، ص 217)

﴿4﴾ “तुम्हारी येह आग जिसे इन्ने आदम रोशन करता है, जहन्म की आग से सत्तर<sup>70</sup> द-रजे कम है।” येह सुन कर सहाबए किराम **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** ने अर्ज़ की : “**يَا رَسُولَ اللَّهِ وَاللَّهِ وَسَلَّمَ** ! जलाने के लिये तो येही काफ़ी है ?” इर्शाद फ़रमाया : “वोह इस से उन्हत्तर<sup>(69)</sup> द-रजे ज़ियादा है, हर द-रजे में यहां की आग के बराबर गरमी है।”

(صحيح مسلم، كتاب العنة، باب في شدة حر نار جهنم برقم ٢٨٤٣، ص ١٥٢٣)

फिर अपने आप से यूं मुख़ातिब हों। “अगर मुझे जहन्म में डाल दिया गया तो मेरा येह नर्म व नाजुक बदन उस के होलनाक अज़ाबात को किस तरह बरदाश्त कर पाएगा ? जब कि जहन्म में पहुंचने वाली तकालीफ़ की शिद्दत के सबब इन्सान पर न तो बेहोशी त़ारी होगी और न ही उसे मौत आएगी। आह ! वोह वक़्त कितनी बे बसी का होगा जिस के तसव्वुर से ही दिल कांप उठता है। क्या येह रोने का मक़ाम नहीं ? क्या अब भी गुनाहों से वहूशत महसूस नहीं होगी और दिल में नेकियों की महब्वत नहीं बढ़ेगी ? क्या अब भी बारगाहे खुदा वन्दी **عَزَّ وَجَلَّ** में सच्ची तौबा पर दिल माइल नहीं होगा ?”

उम्मीद है कि बार बार इस अन्दाज़ से फ़िक्रे मदीना करने की ब-र-कत से दिल में नदामत पैदा हो जाएगी और सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ मिल जाएगी। **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ**।

**صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ**

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

## हब्दीस (20) ताइब की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमाते हैं : “**يَا نَبِيَّ إِنِّي غُنَاةٌ مِنْ الذُّنُوبِ كَمَا لَا ذَنْبَ لَكَ** : “**गुनाह से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं ।”**

(سنن ابن ماجه، ابواب الزهد، باب ذكر التوبة، الحديث ٤٢٥٠، ج ٤، ص ٤٩١)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तौबा से मुराद सच्ची और मक्बूल तौबा है जिस में तमाम शराइते जवाज़ व शराइते क़बूल जम्अ हों कि हुकूकुल इबाद और हुकूके शरीअत अदा कर दिये जाएं, फिर गुज़श्ता कोताही पर नदामत हो और आयिन्दा न करने का अहद, इस तौबा से गुनाह पर मुत्लक़न पकड़ न होगी बल्कि बा'ज़ सूरतों में तो गुनाह नेकियों से बदल जाएंगे । हज़रते राबिआ बसरिया رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهَا हज़रते सुफ़यान सौरी और हज़रते फुजैल बिन इयाज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمَا से फ़रमाया करती थीं : “मेरे गुनाह तुम्हारी नेकियों से कहीं ज़ियादा हैं, अगर मेरी तौबा से येह गुनाह नेकियां बन गए तो फिर मेरी नेकियां तुम्हारी नेकियों से बहुत बढ़ जाएंगी ।”**

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 3, स. 379)

## सच्ची तौबा किसे कहते हैं ?

आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत, शाह मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : सच्ची तौबा के येह मा'ना हैं कि गुनाह पर इस लिये कि वोह उस के रब عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी थी नादिम व परेशान हो कर फ़ौरन छोड़ दे और आयिन्दा कभी उस गुनाह के पास न जाने का सच्चे दिल से पूरा अज़म (या'नी इरादा) करे जो चारए कार इस की तलाफी का अपने हाथ में हो बजा लाए । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 21, स. 121)

**मदीना** : तफ़सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की शाएअ कर्दा किताब “तौबा की रिवायात व हिकायात” का मुता-लअ कीजिये ।

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّدٍ

## सूदख़ोर की तौबा

इब्तिदाई दौर में हज़रते सय्यिदुना हबीब अ-जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي बहुत अमीर थे और अहले बसरा को सूद पर क़र्ज़ा दिया करते थे । जब मक्क़रूज़ से क़र्ज़ का तकाज़ा करने जाते तो उस वक़्त तक न टलते जब तक कि क़र्ज़ वुसूल न हो जाता । और अगर किसी मजबूरी की वजह से क़र्ज़ वुसूल न होता तो मक्क़रूज़ से अपना वक़्त ज़ाएअ होने का हर्ज़ाना वुसूल करते, और उस रक़म से ज़िन्दगी बसर करते । एक दिन किसी के यहां वुसूल-याबी के लिये पहुंचे तो वोह घर पर मौजूद न था । उस की

बीवी ने कहा कि “न तो शोहर घर पर मौजूद है और न मेरे पास तुम्हारे देने के लिये कोई चीज़ है, अलबत्ता मैं ने आज एक भेड़ ज़ब्द की है जिस का तमाम गोश्त तो ख़त्म हो चुका है अलबत्ता सर बाकी रह गया है, अगर तुम चाहो तो वोह मैं तुम को दे सकती हूँ।”

चुनान्वे आप उस से सर ले कर घर पहुंचे और बीवी से कहा कि येह सर सूद में मिला है इसे पका डालो। बीवी ने कहा : “घर में न लकड़ी है और न आटा, भला मैं खाना किस तरह तय्यार करूं ?” आप ने कहा कि “इन दोनों चीज़ों का भी इन्तिज़ाम मक्क़रूज़ लोगों से सूद ले कर करता हूँ।” और सूद ही से येह दोनों चीज़ें ख़रीद कर लाए। जब खाना तय्यार हो चुका तो एक साइल ने आ कर सुवाल किया। आप ने कहा कि “तेरे देने के लिये हमारे पास कुछ नहीं है और तुझे कुछ दे भी दें तो इस से तू दौलत मन्द न हो जाएगा लेकिन हम मुफ़्लिस हो जाएंगे।” चुनान्वे साइल मायूस हो कर वापस चला गया।

जब बीवी ने सालन निकालना चाहा तो वोह हंडिया सालन की बजाए ख़ून से लबरेज़ थी। उस ने शोहर को आवाज़ दे कर कहा : “देखो तुम्हारी कन्जूसी और बद बख़्ती से येह क्या हो गया है ?” आप को येह देख कर इब्रत हासिल हुई और बीवी को गवाह बना कर कहा कि आज मैं हर बुरे काम से तौबा करता हूँ। येह कह कर मक्क़रूज़ लोगों से अस्ल रक़म लेने और सूद ख़त्म करने के लिये निकले। रास्ते में कुछ लड़के

खेल रहे थे आप को देख कर कुछ लड़कों ने आवाज़े कसना शुरू किये कि “दूर हट जाओ हबीब सूदखोर आ रहा है, कहीं उस के क़दमों की खाक हम पर न पड़ जाए और हम उस जैसे बद बख़्त न बन जाएं।” यह सुन कर आप बहुत रन्जीदा हुए और हज़रते हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَوْبَى की ख़िदमत में हाज़िर हो गए उन्होंने ने आप को ऐसी नसीहत फ़रमाई कि बेचैन हो कर दोबारा तौबा की। वापसी में जब एक मक्क़ूज़ शख़्स आप को देख कर भागने लगा तो फ़रमाया “तुम मुझ से मत भागो, अब तो मुझ को तुम से भागना चाहिये ताकि एक गुनहगार का साया तुम पर न पड़ जाए।” जब आप आगे बढ़े तो उन्ही लड़कों ने कहना शुरू किया कि “रास्ता दे दो अब हबीब ताइब हो कर आ रहा है कहीं ऐसा न हो कि हमारे पैरों की गर्द इस पर पड़ जाए और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ हमारा नाम गुनाहगारों में दर्ज कर ले।” आप ने बच्चों की ये बात सुन कर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ से अर्ज़ की : “तेरी कुदरत भी अज़ीब है कि आज ही मैं ने तौबा की और आज ही तुने लोगों की ज़बान से मेरी नेक नामी का ए’लान करा दिया।”

इस के बा’द आप ने ए’लान करा दिया कि जो शख़्स मेरा मक्क़ूज़ हो वोह अपनी तहरीर और माल वापस ले जाए। इस के इलावा आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى ने अपनी तमाम दौलत राहे खुदा عَزَّ وَجَلَّ में ख़र्च कर दी। फिर साहिले फुरात पर एक इबादत ख़ाना ता’मीर कर के इबादत में मशगूल रहे और येह मा’मूल बना लिया कि दिन को इल्मे दीन की



तहसील के लिये हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَعُودِي की खिदमत में पहुंच जाते और रात भर मशगूले इबादत रहते। चूंकि (मुकम्मल कोशिश के बा वुजूद) कुरआने मजीद का तलफ़फ़ुज़ सहीह मख़्रज से अदा नहीं कर सकते थे इस लिये आप को अ-जमी का ख़िताब दे दिया गया।

(تذكرة الاولياء، باب، ذكر حبيب عجمي، ج ١، ص ٥٦-٥٧)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## हदीस (21) नमाज़ की अहम्मियत

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उ-मरे फ़ारूक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमाते हैं :  
 “**النَّامَازُ دِينُ الْإِسْلَامِ** या 'नी नमाज़ दीन का सुतून है।'”

(شعب الإيمان، باب في الصلوات، الحديث ٢٨٠٧، ج ٣، ص ٣٩)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** नमाज़ दीन की अस्ल और बुन्याद है, इसे उम्मुल इबादात, मे'राजुल मुअमिनीन भी कहा जाता है।

(فيض القدير، تحت الحديث ٥١٨٧، ج ٤، ص ٣٢٧)

## मछली अपनी जगह पर थी

शैख़ अबू अब्दुल्लाह जिला رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की वालिदए माजिदा ने एक रोज़ अपने शोहर से मछली लाने की फ़रमाइश की। शैख़ के वालिद बाज़ार गए और अपने फ़रज़न्द (अबू अब्दुल्लाह जिला) को भी हमराह ले गए। बाज़ार से मछली ख़रीदी, और एक मज़दूर तलाश करने

लगे ताकि वोह मछली घर तक पहुंचा दे। एक लड़का मिला और उस ने मछली सर पर उठा ली और साथ चला, रास्ते में मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनाई दी। उस मज़दूर लड़के ने कहा : “नमाज़ के लिये मुझे तहारत की हाज़त है और अज़ान हो रही है, अगर आप राज़ी हों तो मेरा इन्तिज़ार कर लें, वरना अपनी मछली ले कर जाएं।” इतना कह कर उस ने मछली वहीं छोड़ी और मस्जिद चला गया। शैख़ के वालिद ने कहा : “इस लड़के का अल्लाह तआला पर तवक्कुल है, हमें ब द-र-जए औला तवक्कुल करना चाहिये।” चुनान्चे मछली वहीं छोड़ कर हम लोग नमाज़ पढ़ने चले गए। हम लोग नमाज़ पढ़ कर निकले तो मछली अपनी जगह थी, लड़के ने उठा ली और हम लोग घर पहुंचे।

(روض الرياحين الحكاية التاسعة والعشرون بعد المئتين، ص २१०، ملخصاً)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

## हदीस (22) रौज़ए अक्दस की हाज़िरी

हज़रते सय्यिदुना इब्ने उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमाते हैं : “ يَا 'نِي جيس ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की, उस के लिये मेरी शफ़ाअत लाज़िम हो गई।”

(شعب الإيمان، باب في المناسك، فضل الحج والعمرة، الحديث ٤١٥٩، ج ٣، ص ٤٩٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तआला कुरआने पाक में

इर्शाद फ़रमाता है :

وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ

جَاءُواكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللَّهَ

وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ

لَوْجَدُوا اللَّهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا

(प ०५, النساء ६४)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और अगर जब वोह अपनी जानों पर जुल्म करें तो ऐ महबूब तुम्हारे हुज़ूर हाज़िर हों और फिर अल्लाह से मुआफ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअत फ़रमाए तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं ।

सदरुल अफ़ज़िल हज़रते मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन

मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي (अल मु-तवफ़ा 1367 हि.) इस आयत के तहत तफ़सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान में लिखते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि बारगाहे इलाही में रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का वसीला और आप की शफ़ाअत कार-बरआरी (या'नी काम बन जाने) का ज़रीआ है सय्यिदे अलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की वफ़ात शरीफ़ के बा'द एक आ'राबी (या'नी देहाती शख़्स) रौज़ए अक़दस पर हाज़िर हुवा और रौज़ए शरीफ़ा की ख़ाके पाक अपने सर पर डाली और अर्ज़ करने लगा : “या रसूलुल्लाह जो आप ने फ़रमाया हम ने सुना और जो आप पर नाज़िल हुवा उस में येह आयत भी है وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَلَمُوا , मैं ने बेशक अपनी जान पर जुल्म किया और मैं आप के हुज़ूर में अल्लाह से अपने गुनाह की

बख़्शिश चाहने हाज़िर हुवा तो मेरे रब से मेरे गुनाह की बख़्शिश कराइये ।” इस पर क़ब्र शरीफ़ से निदा आई कि तेरी बख़्शिश की गई ।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

## हद्दीस (23) अज़ाबे क़ब्र

हज़रते सय्यि-दतुना आइशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से रिवायत है कि हुजूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमाते हैं : “عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ يا 'नी क़ब्र का अज़ाब हक़ है ।”

(صحيح البخاري، كتاب الجنائز، باب ماجاء في عذاب القبر، الحديث 1372، ج 1، ص 463)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अज़ाबे क़ब्र के मु-तअल्लिक चन्द मसाइल याद रखने चाहिएं (1) यहां क़ब्र से मुराद आलमे बरजख़ है । जिस की इब्तिदा हर शख़्स की मौत से है इन्तिहा क़ियामत पर, उर्फ़ी क़ब्र मुराद नहीं लिहाज़ा जो मुर्दा दफ़न न हुवा बल्कि जला दिया गया या डुबो दिया गया या उसे शेर खा गया उसे भी क़ब्र का हि़साब व अज़ाब है । (2) हि़साबे क़ब्र और है अज़ाबे क़ब्र कुछ और बा'ज लोग हि़साबे क़ब्र में काम्याब होंगे मगर बा'ज गुनाहों की वजह से अज़ाब में मुब्तला जैसे चुगुल ख़ोर और गन्दा (या'नी पेशाब के छींटों से न बचने वाला) (3) काफ़िर को अज़ाबे क़ब्र दाइमी होगा गुनहगार मोमिन को आरिज़ी (4) अज़ाबे क़ब्र रूह को है जिस्म इस के ताबेअ मगर ह़शर के बा'द वाला अज़ाब व सवाब रूह व जिस्म दोनों को होगा । (मिरआतुल मनाज़ीह, जि. 1, स. 125, माखूज़न)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَيِّبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

## क़ब्र में आग भड़क उठी ?

हज़रते सय्यिदुना अम्र बिन शुरहूबील رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं कि एक ऐसा शख्स इन्तिकाल कर गया जिस को लोग मुत्तकी समझते थे। जब उसे दफ़न कर दिया गया तो उस की क़ब्र में अज़ाब के फ़िरिश्ते आ पहुंचे और कहने लगे, हम तुझ को अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के अज़ाब के सो कोड़े मारेंगे। उस ने खौफ़ज़दा हो कर कहा कि मुझे क्यों मारोगे ? मैं तो परहेज़ गार आदमी था। तो उन्होंने ने कहा, अच्छा चलो पचास ही मारते हैं मगर वोह बराबर बहूस करता रहा हत्ता कि फ़िरिश्ते एक पर आ गए और उन्होंने ने एक कोड़ा मार ही दिया। जिस से तमाम क़ब्र में आग भड़क उठी और वोह शख्स जल कर खाकिस्तर (या'नी राख) हो गया। फिर उस को ज़िन्दा किया गया तो उस ने दर्द से तिलमिलाते और रोते हुए फ़रियाद की, आख़िर मुझे येह कोड़ा क्यों मारा गया ? तो उन्होंने ने जवाब दिया, एक रोज़ तूने बे वुज़ू नमाज़ पढ़ ली थी। और एक रोज़ एक मज़्लूम तेरे पास फ़रियाद ले कर आया मगर तूने फ़रियाद रसी न की।

(شرح الصّدور ص 165)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ? अल्लाह عَزَّوَجَلَّ नाराज़ हुवा तो उस ने नेक और परहेज़ गार शख्स की भी गिरिफ़्त फ़रमाई

और वोह अज़ाबे क़ब्र में घिर गया। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हमारे हाले ज़ार पर र्हम फ़रमाए। और हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत फ़रमाए।

امین بجاہ النبی الامین صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अब्वल, (तख़ीज शुदा), बाब : फ़ैज़ाने र-मज़ान, स. 61)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

## हदीस (24) कैदख़ाना

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब الدُّنْيَا سِجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ : “ इशाद फ़रमाते हैं : “ या 'नी दुन्या मोमिन के लिये कैदख़ाना है और काफ़िर के लिये जन्नत। ”

(صحيح مسلم، كتاب الزهد والرقائق، باب الدنيا سجن المؤمن، الحديث 2906، ص 1082)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! या'नी मोमिन दुन्या में कितना ही आराम में हो, मगर उस के लिये आख़िरत की ने'मतों के मुक़ाबले में दुन्या जेलख़ाना है, जिस में वोह दिल नहीं लगाता। जेल अगर्चे A क्लास हो, फिर भी जेल है, और काफ़िर ख़्वाह कितनी ही तकलीफ़ में हो, मगर आख़िरत के अज़ाब के मुक़ाबिल उस के लिये दुन्या बाग़ और जन्नत है। वोह यहां दिल लगा कर रहता है। लिहाज़ा हदीस शरीफ़ पर येह ए' तिराज़ नहीं कि बा'ज मोमिन दुन्या में

आराम से रहते हैं, और बा'ज काफ़िर तक्लीफ़ में ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 4)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

## दुन्या कैदख़ाना है

काज़ी सहल मुहद्दिस رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ एक दिन बड़े तुज़को एहतिशाम के साथ घोड़े पर सुवार कहीं तशरीफ़ ले जा रहे थे । अचानक एक हम्माम सुलगाने वाला, धूएं और गुबार की कसाफ़त से मैला कुचैला यहूदी हज़रते सहल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के सामने आ कर खड़ा हो गया और कहने लगा कि काज़ी साहिब ! मुझे अपने नबी (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهِ وَسَلَّمَ) के इस फ़रमान का मल्लब समझा दीजिये कि “दुन्या मोमिन के लिये कैदख़ाना है और काफ़िर के लिये जन्नत है ।” क्यूं कि आप मोमिन हो कर इस ऐशो आराम और कर्ों फ़र के साथ रहते हैं और मैं काफ़िर हो कर इतना ख़स्ता हाल और आलाम व मसाइब में गिरिफ़्तार हूं । काज़ी सहल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बरजस्ता जवाब दिया : “आराम व आसाइश के बा वुजूद येह दुन्या मेरे लिये जन्नत की अज़ीम ने'मतों के मुक़ाबले में कैदख़ाना है, जब कि तमाम तर तकालीफ़ के बा वुजूद येह दुन्या तुम्हारे लिये दोज़ख़ के होलनाक अज़ाब के मुक़ाबले में जन्नत है ।”

(تفسير روح البيان، سورة الانعام، تحت الآية ٣٢، ج ٣، ص ٢٣)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

## हद्दीस (25) मिस्कीन का हज़

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम يَا نَبِيَّ الْجُمُعَةِ حُجِّ الْمَسَاكِينَ : “ इर्शाद फ़रमाते हैं : ” जुमुअ़ा की नमाज़ मसाकीन का हज़ है ।”

(الفردوس بما نُور الخطاب، الحديث ٢٤٣٦، ج ١، ص ٣٣٣)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मसाकीन मिस्कीन की जम्अ़ है ।**  
जो शख़्स हज़ के लिये जाने से अज़िज़ हो उस का जुमुअ़ा के दिन मस्जिद की तरफ़ जाना उस के लिये हज़ की मानिन्द है ।

(فيض القدير، تحت الحديث ٣٦٣٦، ج ٣، ص ٤٧٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## हज़ की कुरबानी

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन सलमान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان अपना एक ईमान अप्फ़ोज़ वाकिअ़ा बयान फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा कुछ लोगों के साथ हज़ पर जा रहा था । मेरा भाई भी मेरे साथ था । जब हम कूफ़ा पहुंचे तो मैं ज़रूरिय्याते सफ़र ख़रीदने के लिये बाज़ार की तरफ़ चला गया । वहां मैं ने एक वीरान सी जगह में देखा कि एक ख़च्चर मरा पड़ा है और बहुत पुराने और बोसीदा कपड़े पहने हुए एक औरत चाकू से उस का गोशत काट काट कर थैले में रख रही है । मैं ने सोचा कि हो



सकता है कि येह औरत कोई भटियारन हो और येही मुर्दार का गोशत पका कर लोगों को खिला दे, चुनान्चे मुझे इस की तहक़ीक़ ज़रूर करनी चाहिये, पस मैं चुपके चुपके उस के पीछे हो लिया। चलते चलते वोह एक मकान के दरवाज़े पर पहुंची, उस ने दरवाज़ा बजाया तो अन्दर से पूछा गया : “कौन ?” तो जवाब दिया : “खोलो ! मैं ही बदहाल हूं।” दरवाज़ा खुला तो मैं ने देखा कि चार बच्चियां हैं जिन के चेहरों से बदहाली और मुसीबत टपक रही है। वोह औरत अन्दर दाख़िल हो गई और दरवाज़ा बन्द हो गया। मैं जल्दी से दरवाज़े के करीब गया और उस के सूराखों से अन्दर झांकने लगा। मैं ने देखा कि अन्दर से वोह घर बिल्कुल ख़ाली और बरबाद है। उस औरत ने वोह थैला उन लड़कियों के सामने रख दिया और रोते हुए कहने लगी : “लो ! इस को पका लो और अल्लाह तआला का शुक्र अदा करो।”

वोह लड़कियां उस गोशत को काट काट कर लकड़ियों पर भूनने लगीं। मेरे दिल को इस से बहुत ठेस पहुंची और मैं ने बाहर से आवाज़ दी कि, “ऐ अल्लाह की बन्दी ! खुदा तआला के वासिते इस को न खा।” वोह पूछने लगी : “तुम कौन हो ?” मैं ने जवाब दिया : “मैं परदेसी हूं।” उस ने कहा : “हम तो खुद मुक़द्दर के कैदी हैं, तीन साल से हमारा कोई मुईन व मददगार नहीं, तुम हम से क्या चाहते हो ?” मैं ने कहा कि “मजूसियों के एक फ़िर्के के सिवा किसी मज़हब में मुर्दार

खाना जाइज़ नहीं।” कहने लगी कि “हम ख़ानदाने नुबुव्वत से हैं, इन का बाप इन्तिक़ाल कर चुका है, जो तर्का उस ने छोड़ा था वोह ख़त्म हो गया। हमें मा’लूम है कि मुर्दार खाना जाइज़ नहीं लेकिन हमारा चार दिन का फ़ाक्का है और ऐसी हालत में मुर्दार जाइज़ हो जाता है।”

उन के हालात सुन कर मुझे रोना आ गया, मैं उन्हें इन्तिज़ार करने का कह कर वापस हुवा और अपने भाई से कहने लगा कि, “मेरा इरादा हज़ का नहीं रहा।” भाई ने मुझे बहुत समझाया, फ़ज़ाइल वगैरा बताए। मैं ने कहा कि, “बस लम्बी चौड़ी बात न करो।” फिर मैं ने अपना एहराम और सारा सामान लिया और नक्द छ<sup>०</sup> सो दिरहम में से सो दिरहम का कपड़ा ख़रीदा और सो दिरहम का आटा ख़रीदा और बक़िय्या पैसा उस आटे में छुपा कर उस औरत के घर ले जा कर तमाम चीज़ें उस को दे दीं। वोह अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने लगी और कहने लगी : “ऐ इब्ने सलमान ! जा अल्लाह तआला तेरे अगले पिछले सब गुनाह मुआफ़ फ़रमाए और तुझे हज़ का सवाब अता करे और जन्नत में तुझे जगह अता फ़रमाए और दुन्या ही में तुझे ऐसा बदल अता फ़रमाए जो दुन्या में तुझ पर जाहिर हो जाए।”

सब से बड़ी लड़की ने कहा : “अल्लाह तआला आप को इस का दुगना अज़्र अता फ़रमाए और आप के गुनाह बख़्शा दे।” दूसरी लड़की ने कहा कि “आप को अल्लाह तआला इस से ज़ियादा अता

फ़रमाए जितना आप ने हमें दिया ।” तीसरी ने कहा कि “अल्लाह तअ़ाला हमारे नानाजान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ आप का हज़र करे ।” चौथी ने कहा कि, “ऐ अल्लाह तअ़ाला ! जिस ने हम पर एहसान किया तू उस का ने मल बदल जल्दी अ़ता कर और उस के अगले पिछले गुनाह मुअ़ाफ़ कर दे ।” फिर मैं वापस आ गया ।

मैं मजबूरन कूफ़ा ही में रुक गया और बाकी साथी हज़ के लिये रवाना हो गए । जब हाजी लौट कर आने लगे तो मैं ने सोचा कि “उन का इस्तिक़बाल करूं और अपने लिये दुआ करने का कहूं, शायद किसी की मक़बूल दुआ मुझे भी लग जाए ।” जब मुझे हाजियों का क़ाफ़िला नज़र आया तो अपनी हज़ से महरूम पर बे इख़्तियार रोना आ गया । मैं उन से मिला तो कहा : “अल्लाह तअ़ाला तुम्हारे हज़ को क़बूल फ़रमाए और तुम्हें अख़्राजात का बदला अ़ता फ़रमाए ।” उन में से एक ने पूछा कि “येह दुआ कैसी ?” मैं ने कहा : “येह उस शख़्स की दुआ है जो दरवाजे तक की हाज़िरी से महरूम हो ।” वोह कहने लगे, “बड़े तअ़ज्जुब की बात है कि अब तू वहां जाने ही से इन्कार कर रहा है । क्या तू हमारे साथ अ-रफ़ात के मैदान में न था ?..... तूने हमारे साथ रम्ये जमरात न की ?..... और क्या तूने हमारे साथ त़वाफ़ न किये ?.....” आप फ़रमाते हैं कि मैं दिल ही दिल में तअ़ज्जुब करने लगा कि इतने में खुद मेरे शहर का क़ाफ़िला भी आ गया । मैं ने कहा कि

“अल्लाह तअ़ाला तुम्हारी कोशिशें क़बूल फ़रमाए ।” तो वोह भी येही कहने लगे कि “तू हमारे साथ अ-रफ़ात पर न था ? या रम्ये जमरात न की ? और अब इन्कार करता है ।”

फ़िर उन में से एक शख़्स आगे बढ़ा और कहने लगा कि “भाई ! अब क्यूं इन्कार करते हो ? क्या तुम हमारे साथ मक्के शरीफ़ और मदीनए मुनव्वरह में न थे ? और हम शफ़ीए आ'जम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की क़ब्रे अन्वर की ज़ियारत कर के वापस आ रहे थे तो रश की वजह से तुम ने येह थैली मेरे पास अमानत रखवाई थी, जिस की मोहर पर लिखा हुवा है : “مَنْ غَامَلَنَا رِبْحًا” या'नी जो हम से मुअ़ा-मला करता है, नफ़अ़ कमाता है,” अब येह थैली वापस ले लो ।”

हज़रते सय्यिदुना रबीअ़ बिन सलमान اللهُ الْمَسْنَانُ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَسْنَانُ फ़रमाते हैं कि “मैं ने उस थैली को पहले कभी न देखा था, मैं उस को ले कर घर वापस आ गया । इशा के बा'द वज़ीफ़ा पूरा किया और इसी सोच में जागता रहा कि मुअ़ा-मला क्या है ? अचानक मेरी आंख लग गई । ख़्वाब में सरवरे अ़ालम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की ज़ियारत की, मैं ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सलाम अ़र्ज़ किया और हाथ चूमे ।” प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुस्कुराते हुए सलाम का जवाब दिया और कुछ यूं इशाद फ़रमाया : “ऐ रबीअ़ ! आख़िर हम कितने गवाह इस बात पर क़ाइम करें कि तूने हज़ किया है ? तू मानता ही नहीं,

सुन जब तूने मेरी औलाद में से एक औरत पर स-दका किया और अपना ज़ादे राह ईसार कर के अपना हज़ मुलतवी कर दिया तो मैं ने अल्लाह तआला से दुआ की, कि वोह तुझे इस का अच्छा बदला अता फ़रमाए। तो अल्लाह तआला ने तेरी सूरत का एक फ़िरिशता बना कर हुक्म दिया कि वोह क़ियामत तक हर साल तेरी तरफ़ से हज़ किया करे। और दुन्या में तुझे येह बदला दिया है कि छ<sup>6</sup> सो दिरहम के बदले छ<sup>6</sup> सो दीनार अता फ़रमाए, तू अपनी आंखें ठन्डी रख।” फिर आका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वोही अल्फ़ाज़ दोहराए “مَنْ عَامَلَنَا رِبْحًا يَا نَبِيَّ” जो हम से मुआ-मला करता है, नफ़अ कमाता है।” हज़रते सय्यिदुना रबीअ बिन सलमान फ़रमाते हैं कि जब मैं सो कर उठा और थैली को खोला, तो उस में छ<sup>6</sup> सो अशरफ़ियां ही थीं। (रफ़ीकुल ह-रमैन, स. 287)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## हदीस (26) खुश ख़बरी सुनाओ

हज़रते सय्यिदुना अनस रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इशार्द फ़रमाते हैं : “بَشِّرُوا وَلَا تُنْفَرُوا” (लोगों को) नफ़रत न दिलाओ।”

(صحيح البخاري، كتاب العلم، باب ما كان النبي ﷺ يتخولهم الخ، الحديث ٦٩، ج ١، ص ٤٢)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! या'नी लोगों को गुज़स्ता गुनाहों से तौबा करने और नेक आ'माल करने पर हक़ तअ़ाला की बख़्शिश व रहमत की खुश ख़बरियां दो । उन गुनाहों की पकड़ पर इस तरह न डराओ कि उन्हें अल्लाह की रहमत से मायूसी हो कर इस्लाम से नफ़रत हो जाए । बहर हाल इन्ज़ार और डराना कुछ और है और मायूस कर के मु-तनफ़िफ़र (या'नी बद दिल) कर देना कुछ और लिहाज़ा येह हदीस उन आयात व अहादीस के ख़िलाफ़ नहीं जिन में अल्लाह की पकड़ से डराने का हुक्म है ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 5, स. 371)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

## 100 अफ़राद का क़ातिल

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया तुम से पहले एक शख्स ने 99 क़त्ल किये थे । जब उस ने अहले ज़मीन में सब से बड़े अ़ालिम के बारे में पूछा तो उसे एक राहिब के बारे में बताया गया । वोह उस के पास पहुंचा और उस से कहा : “मैं ने निनानवे क़त्ल किये हैं क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ?” राहिब ने उसे मायूस करते हुए कहा :

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

“नहीं।” उस ने उसे भी क़त्ल कर दिया और 100 का अ़दद पूरा कर लिया। फिर उस ने अहले ज़मीन में सब से बड़े आ़लिम के बारे में सुवाल किया तो उसे एक आ़लिम के बारे में बताया गया तो उस ने उस आ़लिम से कहा : “मैं ने सो क़त्ल किये हैं क्या मेरे लिये तौबा की कोई सूरत है ?” उस ने कहा : “हां ! तुम्हारे और तौबा के दरमियान क्या चीज़ रुकावट बन सकती है ? फुलां फुलां अ़लाके की तरफ़ जाओ वहां कुछ लोग अल्लाह ﷻ की इबादत करते हैं उन के साथ मिल कर अल्लाह ﷻ की इबादत करो और अपने अ़लाके की तरफ़ वापस न आना क्यूं कि येह बुराई की सर ज़मीन है।”

वोह कातिल उस अ़लाके की तरफ़ चल दिया जब वोह आधे रास्ते में पहुंचा तो उसे मौत आ गई। रहमत और अज़ाब के फ़िरिशते उस के बारे में बहस करने लगे। रहमत के फ़िरिशते कहने लगे : “येह तौबा के दिली इरादे से अल्लाह ﷻ की तरफ़ आया था।” और अज़ाब के फ़िरिशते कहने लगे कि इस ने कभी कोई अच्छा काम नहीं किया। तो उन के पास एक फ़िरिशता इन्सानी सूरत में आया और उन्हों ने उसे सालिस मुक़रर कर लिया। उस फ़िरिशते ने उन से कहा : “दोनों तरफ़ की ज़मीनों को नाप लो येह जिस ज़मीन के क़रीब होगा उसी का हक़दार है।” जब ज़मीन नापी गई तो वोह उस

जमीन के करीब था जिस के इरादे से वोह अपने शहर से निकला था तो रहमत के फिरिश्ते उसे ले गए ।

(كتاب التوابين، توبة من قتل مائة نفس، ص ۸۵)

تُوبُوا إِلَى اللَّهِ! (या'नी अल्लाह तअ़ाला की बारगाह में तौबा करो)

أَسْتَغْفِرُ اللَّهَ (मैं अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा करता हूँ।)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## हदीस (27) सलाम की अहम्मियत

हज़रते सय्यिदुना जाबिर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब या'नी सलाम قَبْلَ الْكَلَامِ : “ يا 'नी सलाम गुफ़्त-गू से पहले है ।

(جامع الترمذی، ابواب الاستئذان، باب ماجاء في السلام قبل الكلام، الحديث ۲۷۰۸، ج ۴، ص ۳۲)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सलाम तीन किस्म के हैं “सलामे इज़्न” येह घर में दाख़िल होने से पहले इजाज़ते दाख़िला हासिल करने के लिये है । “सलामे तहिय्यत” येह घर में दाख़िल होने और कलाम करने से पहले है । “सलामे वदाअ” येह घर से रुख़सत होते वक़्त है । यहां (या'नी इस हदीस में) सलामे तहिय्यत मुराद है, येह कलाम से पहले चाहिये ताकि तहिय्यत बाक़ी रहे जैसे तहिय्यतुल मस्जिद के



नफ़ल कि वोह बैठने से पहले पढ़े जाएं ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 331)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

## हदीस (28) तकब्बुर का इलाज

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो अ़लम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमाते हैं : “ يَا نَبِيَّ السَّلَامُ بِرَأْيِي مِنَ الْكَبْرِ ” : “ पहल करने वाला तकब्बुर से दूर हो जाता है ।”

(شعب الإيمان، باب في مقاربة اهل الدين... الخ، الحديث: ٨٧٨٦، ج ٦، ص ٤٣٣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जो शख़्स मुसलमानों को सलाम कर लिया करे वोह **ان شاء الله عز وجل** मु-तकब्बिर न होगा उस के दिल में इज्जो नियाज होगा येह अमल **मुजर्रब** है ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 346)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

## आ'ला हज़रत **عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت** की आदते मुबा-रका

हज़रते मौलाना सय्यिद अय्यूब अली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي का बयान है कि “कोहे भवाली से मेरी त-लबी फ़रमाई जाती है, मैं ब हमराही शहजादए असगर हज़रत मौलाना मौलवी शाह मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ां साहिब مَدَطَّلَةُ الْأَفْدَس, बा'दे मगरिब वहां पहुंचता हूं, शहजादा मम्दूह अन्दर

मकान में जाते हुए येह फ़रमाते हैं “अभी हुज़ूर को आप के आने की इत्तिलाअ करता हूं।” मगर बा वुजूद इस आगाही के कि हुज़ूर (या'नी इमामे अहले सुन्नत शाह मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن) तशरीफ़ लाने वाले हैं, तक्दीमे सलाम (या'नी सलाम में पहल) सरकार ही फ़रमाते हैं, उस वक़्त देखता हूं कि हुज़ूर बिल्कुल मेरे पास जल्वा फ़रमा हैं।”

(हयाते आ'ला हज़रत, जि. 1, स. 96)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

## हद्दीस (29) मस्जिद में हंसने का नुक़सान

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इशाद फ़रमाते हैं : “ يا 'नी मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है।” (الفردوس بما نُور الخطاب، الحديث ٣٧٠٦، ج ٢، ص ٤١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! खयाल रहे कि मुस्कुराना अच्छी चीज़ है (और) क़हक़हा बुरी चीज़ तबस्सुम रहमते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की आदते करीमा थी ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 14)

जिस की तस्कीं से रोते हुए हंस पड़ें

उस तबस्सुम की आदत पे लाखों सलाम

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

## हदीस (30) क़हक़हा की मज़म्मत

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब الْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ، وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللَّهِ“ : “ इर्शाद फ़रमाते हैं : “ या'नी क़हक़हा शैतान की तरफ़ से है और मुस्कराना अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ से है।”

(المعجم الصغير، للطبراني، الحديث ١٠٥٧، ج ٢، ص ٢١٨)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़हक़हा से मुराद आवाज़ के साथ हंसना है। शैतान इसे पसन्द करता है और उस पर सुवार हो जाता है। जब कि तबस्सुम से मुराद बिगैर आवाज़ के थोड़ी मिक्दार में हंसना है।

(فيض القدير، تحت الحديث ٢١٩٦، ج ٣، ص ٤٠٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## हदीस (31) मिस्वाक की फ़ज़ीलत

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना अइशा सिद्दीका रिवायत करती हैं कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमाते हैं : “ يَا 'نِي مِصْوَاكُ مَطْهَرَةٌ لِلْفَمِ مَرْضَاءٌ لِلرَّبِّ ” और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की खुशनुदी का सबब है।”

(سنن النسائي، أبواب الطهارة وسننها، باب السواك، ج ١، ص ١٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शरीअत में मिस्वाक से मुराद वोह लकड़ी है जिस से दांत साफ़ किये जाएं। सुन्नत येह है

कि येह किसी फूल या फलदार दरख़्त की न हो कड़वे दरख़्त की हो । मोटाई छुंगली के बराबर हो, लम्बाई बालिशत से ज़ियादा न हो । दांतों की चौड़ाई में की जाए न कि लम्बाई में । बे दांत वाले इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें मसूढ़ों पर उंगली फैर लिया करें । मिस्वाक इतने मक़ाम पर सुन्नत है : वुजू में, कुरआन शरीफ़ पढ़ते वक़्त, दांत पीले होने पर, भूक या देर तक ख़ामोशी या बे ख़्वाबी की वजह से मुंह से बदबू आने पर ।

(मिरआतुल मनाजीह, किताबुत्तहारह, बाबुस्सिवाक, जि. 1, स. 275)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

## हब्दीस (32) जमाअत की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि हुजुरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक وَسَلَّم عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ يا 'नी इर्शाद फ़रमाते हैं : “ صَلَاةُ الْجَمَاعَةِ تَفْضُلُ صَلَاةِ الْفَدِّ بِسَبْعٍ وَعِشْرِينَ دَرَجَةً ” : बा जमाअत नमाज़ अदा करना, तन्हा नमाज़ पढ़ने से सत्ताईस द-रजे ज़ियादा फ़ज़ीलत रखती है ।”

(صحيح البخاري، كتاب الأذان، باب فضل صلاة الجماعة، الحديث ٦٤٥، ج ١، ص ٢٢٢)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़म रिवायात में येही है कि नमाज़े बा जमाअत ब निस्बत तन्हा के 25 द-रजे जाइद है । मगर बा'ज़ रिवायतों में सत्ताईस द-रजे भी आया है । बल्कि एक रिवायत में 36 द-रजे भी वारिद है । बा'ज़ में 50 भी । उ-लमा ने इस की मुख़्तलिफ़

तौजीहात की हैं। सब में उम्दा तौजीह येह है कि येह नमाज़ी और वक़्त और हालत के ए'तिबार से मुख़लिफ़ है।

(नुज़हतुल कारी शर्हे सहीहुल बुख़ारी, जि. 2, स. 178)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

## 25 मर्तबा नमाज़ अदा की

इमामे आ 'जम अबू हनीफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के शागिर्द हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन समाआ رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ ने एक सो तीस बरस की उम्र पाई आप رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ रोज़ाना दो सो रक़अत नफ़ल पढ़ा करते थे। आप رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं: “मुसल्लसल 40 बरस तक मेरी एक मर्तबा के इलावा कभी तकबीरे ऊला फ़ौत नहीं हुई। जिस दिन मेरी वालिदा का इन्तिक़ाल हुवा। उस दिन एक वक़्त की जमाअत छूट गई तो मैं ने इस ख़याल से कि जमाअत की नमाज़ का 25 गुना सवाब ज़ियादा मिलता है। उस नमाज़ को मैं ने अकेले 25 मर्तबा पढ़ा। फिर मुझे कुछ गुनूदगी आ गई। तो किसी ने ख़्वाब में आ कर कहा, 25 नमाज़ें तो तुम ने पढ़ लीं मगर फ़िरिशतों की “आमीन” का क्या करोगे?”

(तेहज़िब तेहज़िब, حرف الميم, من اسمه محمد, الرقم 6172, ج 7, ص 191)

हदीस शरीफ़ में है कि इमाम जब “غَيْرِ الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ”

कहे तो तुम लोग “आमीन” कहो, जिस की “आमीन” फ़िरिशतों की

“आमीन” के साथ होती है उस के गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं।

(صحيح بخارى، كتاب التفسير، الحديث ٤٤٧٥، ج ٣، ص ١٦٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## जमाअत न छोड़ी

इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का शुरूअ से ही बा जमाअत नमाज़ पढ़ने का ज़ेहन है, जमाअत तर्क कर देना तो गोया आप की लुगत में था ही नहीं। यहां तक कि जब आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की वालिदए मोह-त-रमा का इन्तिक़ाल हुवा तो उस वक़्त घर में दूसरा कोई मर्द न था, आप अकेले थे मगर वालिदए मोह-त-रमा की मय्यित छोड़ कर मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने की सआदत पाई। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं: “मां के ग़म में मेरे आंसू ज़रूर बह रहे थे, मगर इस सूरत में भी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ जमाअत न छोड़ी।”

नमाज़ों में मुझे हरगिज़ न हो सुस्ती कभी आका رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

पढ़ूं पांचों नमाज़ों बा जमाअत या रसूलल्लाह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## हब्दीस (33) चुगुल ख़ोर की मजम्मत

हज़रते सय्यिदुना हुजैफ़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिये

मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम या'नी لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَاتٌ : “इशादि फ़रमाते हैं : चुगुल ख़ोर जन्नत में दाख़िल नहीं होगा।”

(صحيح البخاري، كتاب الآداب، باب ما يكره من النميمة، الحديث ٦٠٥٦، ج ٤، ص ١١٥)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क़त्तात वोह शख़्स है जो दो मुख़ालिफ़ों की बातें छुप कर सुने और फिर उन्हें ज़ियादा लड़ाने के लिये एक की बात दूसरे तक पहुंचाए। अगर येह शख़्स ईमान पर मरा तो जन्नत में अब्वलन न जाएगा बा'द में जाए तो जाए अगर कुफ़्र पर मरा तो कभी वहां न जाएगा। (मुस्लिम शरीफ़ में नम्माम का लफ़ज़ इस्ति'माल हुवा है) जो दो तरफ़ा झूटी बातें लगा कर सुल्ह करा दे वोह नम्माम नहीं मुस्लेह है नम्माम वोह है जो लड़ाई व फ़साद के लिये येह ह-र-कत करे।**

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 452)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَىٰ أَهْلِ بَيْتِهِ

**चुग़ली किसे कहते हैं ?**

**शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी दाम्त बَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ अपने रिसाले “बुरे ख़ातिमे के अस्बाब” के सफ़हा 9 पर लिखते हैं : अल्लामा ऐनी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इमाम न-ववी से नक़ल फ़रमाया कि किसी की बात ज़रर (या'नी नुक़सान) पहुंचाने के इरादे से दूसरों को पहुंचाना चुग़ली है।**

(عمدة القارى تحت الحديث ٢١٦ ج ٢ ص ٥٩٤ دار الفكر بيروت)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

## क्या हम चुग़ली से बचते हैं ?

अफ़सोस ! अक्सर लोगों की गुफ़्त-गू में आज कल ग़ीबत व चुग़ली का सिल्लिसला बहुत ज़ियादा पाया जाता है। दोस्तों की बैठक हो या मज़हबी इज्तिमाअ के बा'द जमघट, शादी की तक़रीब हो या ता'ज़ियत की निशस्त, किसी से मुलाक़ात हो या फ़ोन पर बात, चन्द मिनट भी अगर किसी से गुफ़्त-गू की सूरत बने और दीनी मा'लूमात रखने वाला कोई हुस्सास फ़र्द अगर उस गुफ़्त-गू की “तश्ख़ीस” करे तो शायद अक्सर मजालिस में दीगर गुनाहों भरे अल्फ़ाज़ के साथ साथ वोह दरजनों “चुग़लियां” भी साबित कर दे। हाए ! हाए ! हमारा क्या बनेगा !!! एक बार फिर इस हृदीसे पाक पर ग़ौर कर लीजिये : “चुग़ुल ख़ोर जन्नत में नहीं जाएगा।” काश ! हमें हक़ीक़ी मा'नों में ज़बान का कुफ़ले मदीना नसीब हो जाए, काश ! ज़रूरत के सिवा कोई लफ़ज़ ज़बान से न निकले, ज़ियादा बोलने वाले और दुन्यवी दोस्तों के झुरमट में रहने वाले का ग़ीबत और बिल खुसूस चुग़ली से बचना बेहद दुश्वार है। आह ! आह ! आह ! हृदीसे पाक में है : “जिस शख़्स की गुफ़्त-गू ज़ियादा हो उस की ग़-लतियां भी ज़ियादा होती हैं और जिस की ग़-लतियां ज़ियादा हों उस के गुनाह ज़ियादा होते हैं और जिस के गुनाह ज़ियादा हों वोह जहन्नम के ज़ियादा लाइक़ है।”

(बुरे ख़ातिमे के अस्बाब, स. 9) (حلیة الاولیاء ج ۳ ص ۸۷-۸۸ رقم ۳۲۷۸ دارالکتب العلمیة بیروت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)



## चुग़ली से तौबा

हज़रते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के बारे में मरवी है कि एक शख़्स उन के पास हाज़िर हुवा और उस ने किसी दूसरे के बारे में कोई बात ज़िक्र की। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया अगर तुम चाहो तो हम तुम्हारे मुआ-मले में ग़ौर करें अगर तुम झूटे हुए तो इस आयत के मिस्दाक़ हो गए :

إِنْ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَأٍ فَتَبَيَّنُوْا

(प २६, الحجرات: ६)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहक़ीक़ कर लो।

और अगर तुम सच्चे हुए तो इस आयत के मिस्दाक़ हो जाओगे :

هَمَّا نِرْمَشَاءُ بِسَيِّمٍ ۝

(प २९, القلم: ११)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : बहुत ता'ने देने वाला बहुत इधर की उधर लगाता फिरने वाला।

और अगर तुम चाहो तो हम तुम्हें मुआफ़ कर दें। उस ने अर्ज़ की : अमीरुल मुअमिनीन ! मुआफ़ कर दीजिये आयिन्दा मैं ऐसा नहीं करूंगा।

(احياء علوم الدين، كتاب آفات اللسان، ج ३، ص १९३)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

## चुग़ल ख़ोर गुलाम

हज़रते सय्यिदुना हम्माद बिन स-लमह رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने गुलाम बेचा और ख़रीदार से कहा : “इस में चुग़ल

ख़ोरी के इलावा कोई ऐब नहीं।” उस ने कहा : “मुझे मन्ज़ूर है।” और उस गुलाम को ख़रीद लिया। गुलाम चन्द दिन तो ख़ामोश रहा फिर अपने मालिक की बीवी से कहने लगा : “मेरा आका तुझे पसन्द नहीं करता और दूसरी औरत लाना चाहता है, जब तुम्हारा ख़ावन्द सो रहा हो तो उस्तरे के साथ उस की गुद्दी के चन्द बाल मूँड लेना ताकि मैं कोई मन्तर करूँ, इस तरह वोह तुम से महबूबत करने लगेगा।” और दूसरी तरफ़ उस के शोहर से जा कर कहा : तुम्हारी बीवी ने किसी को दोस्त बना रखा है और तुझे क़त्ल करना चाहती है, तुम झूट मूट के सो जाना ताकि तुम्हें हकीकते हाल मा'लूम हो जाए।” वोह शख़्स बनावटी तौर पर सो गया तो औरत उस्तुरा ले कर आई। वोह शख़्स समझा कि वोह इसे क़त्ल करने के लिये आई है। चुनान्वे वोह उठा और अपनी बीवी को क़त्ल कर दिया। जब औरत के घर वाले आए तो उन्होंने ने इसे क़त्ल कर दिया और इस तरह उस चुगुल ख़ोर गुलाम की वजह से दो क़बीलों के दरमियान लड़ाई शुरू हो गई।

(احياء علوم الدين، كتاب آفات اللسان، ج ۳، ص ۱۹۵)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّدٍ

### हदीस (34) रज़्ज़ाक़ का करम

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब إِنَّ الرِّزْقَ لِيَطْلُبُ الْعَبْدَ كَمَا يَطْلُبُهُ أَجَلُهُ : “ इशाद फ़रमाते हैं : “ या 'नी रोज़ी बन्दे को ऐसे तलाश करती है जैसे उसे उस की मौत तलाश करती है।”

(حلية الاولياء، رقم ۰۷۹۰۸، ج ۶، ص ۸۹)

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मक़सद येह है कि मौत को तुम तलाश करो या न करो बहर हाल तुम्हें पहुंचेगी यूंही तुम रिज़क़ को तलाश करो या न करो ज़रूर पहुंचेगा । हां ! रिज़क़ की तलाश सुन्नत है (और) मौत की तलाश मम्मूअ, मगर हैं दोनों यक़ीनी ।

(मिरआतुल मनाजीह, जि. 7, स. 126)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

### भुना हुवा हरन

हज़रते सय्यिदुना अबू इब्राहीम यमानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي फ़रमाते हैं :

“एक मर्तबा हम चन्द रु-फ़का हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَعْظَم की हमराही में समुन्दर के क़रीब एक वादी की तरफ़ गए । हम समुन्दर के किनारे किनारे चल रहे थे कि रास्ते में एक पहाड़ आया जिसे ज-बले “कफ़र फ़ैर” कहते हैं । वहां हम ने कुछ देर क़ियाम किया और फिर सफ़र पर रवाना हो गए । रास्ते में एक घना जंगल आया जिस में ब कसरत खुशक दरख़्त और खुशक झाड़ियां थीं । शाम क़रीब थी, सर्दियों का मौसिम था । हम ने हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْأَعْظَم की बारगाह में अर्ज़ की : “हुज़ूर ! अगर आप मुनासिब समझें तो आज रात हम साहिले समुन्दर पर गुज़ार लेते हैं । यहां इस क़रीबी जंगल में खुशक लकड़ियां बहुत हैं । हम लकड़ियां जम्अ कर के आग रोशन कर लेंगे इस तरह हम सर्दी और दरिन्दों वग़ैरा से महफूज़ रहेंगे ।”

आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “ठीक है जैसे तुम्हारी मरज़ी ।” चुनान्चे हमारे कुछ दोस्तों ने जंगल से खुशक लकड़ियां इकट्ठी कीं और एक शख्स को आग लेने के लिये एक क़रीबी क़ल्प् की तरफ़ भेज दिया । जब वोह आग ले कर आया तो हम ने जम्अ शुदा लकड़ियों में आग लगा दी और सब आग के इर्द गिर्द बैठ गए और हम ने खाने के लिये रोटियां निकाल लीं । अचानक हम में से एक शख्स ने कहा : “देखो इन लकड़ियों से कैसे अंगारे बन गए हैं, ऐ काश ! हमारे पास गोश्त होता तो हम उसे इन अंगारों पर भून लेते ।” हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम इब्ने अदहम رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَعْظَمُ ने उस की येह बात सुन ली और फ़रमाने लगे : “हमारा पाक परवर्द गार عَزَّ وَجَلَّ इस बात पर क़ादिर है कि तुम्हें इस जंगल में ताज़ा गोश्त खिलाए ।”

अभी आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ येह बात फ़रमा ही रहे थे कि अचानक एक तरफ़ से शेर नुमूदार हुवा जो एक फ़र्बा हरन के पीछे भाग रहा था । हरन का रुख़ हमारी ही तरफ़ था । जब हरन हम से कुछ फ़ासिले पर रह गया तो शेर ने उस पर छलांग लगाई और उस की गरदन पर शदीद हम्ला किया जिस से वोह तड़पने लगा । येह देख कर हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَعْظَمُ उठे और उस हरन की तरफ़ लपके । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को आता देख कर शेर हरन को छोड़ कर पीछे हट गया । आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “येह रिज़्क अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ ने हमारे लिये भेजा है । चुनान्चे हम ने हरन को ज़ब्द किया और उस का गोश्त अंगारों पर भून भून कर खाते रहे और शेर दूर बैठा हमें देखता रहा ।” (عيون الحكايات، حكاية الحادية والسبعون بعد المائة، ص 182)

(अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो... और उन के सदके हमारी मग़िफ़रत हो।

(अमिन بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

## हृदीश (35) हया ईमान से है

हुजूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

इर्शाद फ़रमाते हैं : “ يَا 'نِي هَيَا إِيمَانٌ مِنْ الْإِيمَانِ ”

(صحيح مسلم، كتاب الإيمان، باب بيان عدد شعب الإيمان... الخ بالحديث ٣٦، ص ٤٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! शर्मो हया ईमान का रुक्ने आ'ला

है। दुन्या वालों से हया दुन्यावी बुराइयों से रोक देती है। दीन वालों से हया दीनी बुराइयों से रोक देती है। अल्लाह रसूल से शर्मो हया तमाम बद अक़ीदगियों बद अ-मलियों से बचा लेती है। ईमान की इमारत इसी शर्मो हया पर काइम है। दरख़्ते ईमान की जड़ मोमिन के दिल में रहती है (जब कि) इस की शाखें जन्नत में हैं। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 641)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

## बा हया नौ जवान

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ अपने रिसाले “बा हया

नौ जवान” के सफ़हा 1 पर लिखते हैं :

बसरा में एक बुजुर्ग رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ “मिस्की” के नाम से मशहूर

थे। “मुश्क” को अ-रबी में “मिस्क” कहते हैं। लिहाजा मिस्की के मा'ना हुए “मुश्कबार” या'नी मुश्क की खुशबू में बसा हुवा। वोह बुजुर्ग

رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ हर वक्त मुश्कवार व खुशबूदार रहा करते थे। यहां तक कि जिस रास्ते से गुज़र जाते वोह रास्ता भी महक उठता। जब दाखिले मस्जिद होते तो उन की खुशबू से लोगों को मा'लूम हो जाता कि हज़रते मिस्की رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ तशरीफ़ ले आए हैं। किसी ने अर्ज़ किया, हुज़ूर! आप को खुशबू पर कसीर रक़म खर्च करनी पड़ती होगी। फ़रमाया, “मैं ने कभी खुशबू ख़रीदी न लगाई। मेरा वाक़िअ़ा अज़ीबो ग़रीब है :

मैं बग़दादे मुअल्ला के एक खुशहाल घराने में पैदा हुवा। जिस तरह उ-मरा अपनी औलाद को ता'लीम दिलवाते हैं मेरी भी इसी तरह ता'लीम हुई। मैं बहुत ख़ूब सूरत और बा ह्या था। मेरे वालिद साहिब से किसी ने कहा, “इसे बाज़ार में बिठाओ ताकि येह लोगों से घुल मिल जाए और इस की ह्या कुछ कम हो।” चुनान्चे मुझे एक बज़्ज़ाज़ (या'नी कपड़ा बेचने वाले) की दुकान पर बिठा दिया गया। एक रोज़ एक बुढ़िया ने कुछ क़ीमती कपड़े निकलवाए, फिर बज़्ज़ाज़ (या'नी कपड़े वाले) से कहा, “मेरे साथ किसी को भेज दो ताकि जो पसन्द हों उन्हें लेने के बा'द क़ीमत और बक़िय्या कपड़े वापस लाए।” बज़्ज़ाज़ ने मुझे उस के साथ भेज दिया। बुढ़िया मुझे एक अज़ीमुश्शान महल में ले गई और आरास्ता कमरे में भेज दिया। क्या देखता हूं कि एक ज़ेवरात से आरास्ता खुश लिबास जवान लड़की तख़्त पर बिछे हुए मुनक्क़श क़ालीन पर बैठी है, तख़्त व फ़र्श सब के सब ज़र्री हैं और इस क़दर नफ़ीस कि ऐसे मैं ने कभी नहीं देखे थे। मुझे देखते ही उस लड़की पर शैतान ग़ालिब आया और

वोह एक दम मेरी तरफ़ लपकी और छेड़ख़ानी करते हुए “मुंह काला” करवाने के दर पै हुई। मैं ने घबरा कर कहा, “अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डर !” मगर उस पर शैतान पूरी तरह मुसल्लत था। जब मैं ने उस की जिद देखी तो गुनाह से बचने की एक तज्वीज़ सोच ली और उस से कहा, मुझे इस्तिन्जा ख़ाने जाना है। उस ने आवाज़ दी तो चारों तरफ़ से लौंडियां आ गई, उस ने कहा, “अपने आका को बैतुल ख़ला में ले जाओ।” मैं जब वहां गया तो भागने की कोई राह नज़र नहीं आई, मुझे उस औरत के साथ “मुंह काला” करते हुए अपने रब عَزَّوَجَلَّ से हया आ रही थी और मुझ पर अज़ाबे जहन्नम के ख़ौफ़ का ग़-लबा था। चुनान्चे एक ही रास्ता नज़र आया और वोह येह कि मैं ने इस्तिन्जा ख़ाने की नजासत से अपने हाथ मुंह वगैरा सान लिये और ख़ूब आंखें निकाल कर उस कनीज़ को डराया जो बाहर रुमाल और पानी लिये खड़ी थी, मैं जब दीवानों की तरह चीख़ता हुवा उस की तरफ़ लपका तो वोह डर कर भागी और उस ने पागल, पागल का शोर मचा दिया। सब लौंडियां इकट्ठी हो गई और उन्होंने मिल कर मुझे एक टाट में लपेटा और उठा कर एक बाग़ में डाल दिया। मैं ने जब यकीन कर लिया कि सब जा चुकी हैं तो उठ कर अपने कपड़े और बदन को धो कर पाक कर लिया और अपने घर चला गया मगर किसी को येह बात नहीं बताई। उसी रात मैं ने ख़्वाब में देखा कि कोई कह रहा है, “तुम को हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام से क्या ही ख़ूब मुना-सबत है” और कहता है कि “क्या तुम मुझे जानते हो ?” मैं ने कहा, “नहीं।” तो उन्होंने ने कहा, “मैं जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام

हूँ।” इस के बा’द उन्होंने ने मेरे मुंह और जिस्म पर अपना हाथ फैर दिया। उसी वक़्त से मेरे जिस्म से मुश्क की बेहतरीन खुशबू आने लगी। यह हज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के दस्ते मुबारक की खुशबू है।”

(رَوْضُ الرِّيَاحِينَ ص ۳۳۴ دار الكتب العلمية بيروت)

**मदीना :** हया के मु-तअल्लिक़ मज़ीद तफ़सीलात जानने के लिये अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ का रिसाला “बा हया नौ जवान” मक-त-बतुल मदीना की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन हासिल कीजिये।

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

**हद्दीस (36) साक़िये कौसर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का फ़रमान**

हज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहन्शाहे बनी आदम يَا نَبِيَّ يَا نَبِيَّ الْقَوْمِ آخِرُهُمْ شَرِيًّا : “इशाद फ़रमाते हैं : “یا 'नी कौम को पानी पिलाने वाला, सब से आख़िर में पीता है।”

(صحيح مسلم، كتاب المساجد، باب قضاء الصلاة الفائتة... الخ، الحديث ۶۸۱، ص ۳۴۴)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** क़ानून येह है कि पिलाने वाला पीछे पिये, खिलाने वाला पीछे खाए। हम हैं पिलाने वाले इस लिये हम तुम्हारे बा’द पियेंगे। ख़याल रहे कि रब तअ़ाला की तरफ़ से क़ासिम हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ थे और ता क़ियामत हैं।

(मिरआतुल मनाज़ीह, जि. 8, स. 224)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)



## हब्दीस (37) आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ का महीना

उम्मुल मुअमिनीन हज़रते सय्यि-दतुना आइशा से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, हबीबे परवर्द गार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमाते हैं :

“شَعْبَانُ شَهْرِي وَرَمَضَانُ شَهْرُ اللَّهِ”  
 र-मज़ान अल्लाह एज़रुजल का महीना है ।”

(الجامع الصغير، للسيوطي، الحديث ٤٨٨٩، ص ٣٠١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने शा'बान को इस लिये अपना महीना फ़रमाया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इस महीने में रोज़े रखा करते थे हालां कि येह रोज़े आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर वाजिब नहीं थे । और र-मज़ान को इस लिये अल्लाह तआला का महीना फ़रमाया कि उस ने इस महीने के रोज़े मुसल्मानों पर फ़र्ज किये हैं ।

(فيض القدير، تحت الحديث ٤٨٨٩، ج ٤، ص ٢١٣)

## शा'बान की तजल्लियात व ब-रकात

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَةِ अपने रिसाले “आक़ा का महीना” के सफ़हा 4 पर लिखते हैं : लफ़ज़ “शा'बान” में पांच हुरूफ़ हैं, ش, ع, ب, ا, ن । सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म, महबूबे सुब्हानी, किन्दीले नूरानी, शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी فَدَسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي نक्ल फ़रमाते हैं “ش” से मुराद शरफ़ या'नी बुजुर्गी, “ع” से मुराद

इलुव्व या'नी बुलन्दी, “ب” से मुराद बिर या'नी भलाई व एहसान, “ا” से मुराद उल्फ़त और “ن” से मुराद नूर है तो येह तमाम चीज़ें अल्लाह तअ़ाला अपने बन्दों को इस महीने में अ़ता फ़रमाता है, येह वोह महीना है जिस में नेकियों के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, ब-रकात का नुज़ूल होता है, ख़ताएं तर्क कर दी जाती हैं और गुनाहों का कफ़ारा अदा किया जाता है, और ख़ैरुल बरिय्यह, सय्यिदुल वरा जनाबे मुहम्मद मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूदे पाक की कसरत की जाती है, और येह नबिय्ये मुख़्तार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेजने का महीना है। (غنية الطالبين، ج ١، ص ٢٤٦)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### हद्दीश (38) फ़ितना बाज़ की मज़म्मत

हज़रते सय्यिदुना अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमाते हैं : “الْفِتْنَةُ نَائِمَةٌ لَّعَنَ اللَّهُ مَنْ يَقْظُهَا” : “फ़ितना सो रहा है, इस के जगाने वाले पर अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की ला'नत ।”

(الجامع الصغير، الحديث ٥٩٧٥، ص ٣٧٠)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! किसी दीनी फ़ाएदे के बिगैर लोगों को इज़्तिराब, इख़्तिलाफ़, मुसीबत और आज़माइश में मुब्तला कर के निज़ामे ज़िन्दगी को बिगाड़ देना “फ़ितना” कहलाता है ।

(الحديث النبوية ج ٢، ص ١٢٦) लिहाज़ा हर वोह चीज़ जो मुसल्मानों के दरमियान

फ़ितने, शर, अ़दावत और बुग़ज़ का बाइस बने, हमें उस से बचना चाहिये। फ़ितने को कुरआने पाक में क़त्ल से ज़ियादा सख़्त कहा गया है, अगर इसी बात पर ग़ौर कर लिया जाए तो फ़ितने से बचने के लिये काफ़ी है। चुनान्चे अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ इर्शाद फ़रमाता है :

وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ

(پ ۲، البقرة: ۱۹۱)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : और इन

का फ़साद तो क़त्ल से भी सख़्त है।

इमाम बैज़ावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي फ़ितने के क़त्ल से ज़ियादा सख़्त व बुरा होने की वजह येह बयान करते हैं कि “चूँकि क़त्ल के मुक़ाबले में फ़ितने की तकलीफ़ ज़ियादा सख़्त और इस का रन्जो अलम ज़ियादा देर तक काइम रहता है इसी लिये इस को क़त्ल से ज़ियादा सख़्त फ़रमाया गया।”

(الحديقة الندية، ج ۲، ص ۱۵۴)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

**हद्दीश (39) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये महब्बत करना**

हज़रते सय्यिदुना अबू ज़र रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इर्शाद फ़रमाते हैं : “ يَا أَفْضَلَ الْأَعْمَالِ الْحُبُّ فِي اللَّهِ وَالْبُغْضُ فِي اللَّهِ : ” अमल अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये महब्बत करना और अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये दुश्मनी करना है।” (سنن أبي داود، كتاب السنة باب مجانية أهل الأهل، بالحديث ۴۵۹۹، ج ۴، ص ۲۶۴)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ के लिये महब्बत का मत्लब येह है कि किसी से इस लिये महब्बत की जाए कि वोह**

दीनदार है और **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये अ़दावत का मत्लब येह है कि किसी से अ़दावत हो तो इस बिना पर हो कि वोह दीन का दुश्मन है या दीनदार नहीं । (नुज़हतुल कारी, जि. 1, स. 295) इमाम ग़ज़ाली **فَرَمَاتے** हैं अगर कोई शख़्स बावर्ची से इस लिये महब्बत करता है कि उस से अच्छा खाना पकवा कर फु-करा को बांटे तो येह **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये महब्बत है और अगर अ़लिमे दीन से इस लिये महब्बत करता है कि उस से इल्मे दीन सीख कर दुन्या कमाए तो येह दुन्या के लिये महब्बत है । (मिरआतुल मनाजीह, जि. 1, स. 54)

**हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद** **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से मरवी है कि रहमते अ़लम, नूरे मुजस्सम, शहन्शाहे बनी आदम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अ़लीशान है : “येह बात ईमान से है कि एक शख़्स दूसरे से फ़क़त **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के लिये महब्बत करे उस में दिये जाने वाले माल का दख़ल न हो तो ऐसी महब्बत ईमान (का हिस्सा) है ।”

(المعجم الاوسط، رقم الحديث ٧٢١٤، ج ٥، ص ٢٤٥)

इमाम न-ववी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي** फ़रमाते हैं : “**अल्लाह** और **रसूल** **عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महब्बत में ज़िन्दा और इन्तिक़ाल कर जाने वाले औलिया व सालिहीन **رَحْمَتُهُمُ اللهُ تَعَالَى** की महब्बत भी शामिल है और **अल्लाह** व **रसूल** **عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की अफ़ज़ल तरीन महब्बत येह है उन के अहक़ाम पर अ़मल और नवाही से इज्तिनाब किया जाए ।”

(شرح مسلم للنووي، كتاب البر والصلة، باب المرء مع من احب، ج ٢، ص ٣٣١)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ ! हमारे अकाबिरीन की चलती फिरती तस्वीर थे। चुनान्चे हज़रते अबू उबैदा बिन जर्ह رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जंगे उहुद में अपने बाप जर्ह को क़त्ल किया और हज़रते अबू बक्र सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने रोजे बद्र अपने बेटे अब्दुरहमान को मुबा-रज़त (या'नी मुकाबले) के लिये त़लब किया लेकिन रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन्हें इस जंग की इजाज़त न दी और सय्यिदुना मुसअब बिन उमैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने भाई अब्दुल्लाह बिन उमैर को क़त्ल किया और हज़रते उमर बिन ख़त्ताब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने मामूं आस बिन हश्शाम बिन मुगीरा को रोजे बद्र क़त्ल किया और हज़रते अली बिन अबी त़ालिब व हम्ज़ा व अबू उबैदा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ ने रबीआ के बेटों उ़त्बा और शैबा को और वलीद बिन उ़त्बा को बद्र में क़त्ल किया जो इन के रिश्तेदार थे खुदा और रसूल पर ईमान लाने वालों को क़राबत और रिश्तेदारी का क्या पास ।

(तफ़ि़र ख़ाज़ाऩ अल-अरफ़ान, अल-जुअद, त़हत लाये २२)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

## हदीस (40) नमाज़ क़ज़ा करने का वबाल

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, अल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के महबूब, दानाए ग़यूब, मुनज़ज़हुन अनिल उ़यूब مَنْ تَرَكَ صَلَاةً مُتَعَمِّدًا كُتِبَ اسْمُهُ عَلَى بَابِ النَّارِ فَيَمْنُ يَدْخُلُهَا : इर्शाद फ़रमाते हैं : या'नी जो कोई जान बूझ कर एक नमाज़ भी क़ज़ा कर देता है, उस का नाम

जहन्म के उस दरवाजे पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्म में दाखिल होगा ।”

(حلیة الاولیاء، رقم ۱۰۵۹۰، ج ۷، ص ۲۹۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जहन्मियों के बारे में इर्शाद फ़रमाया :

مَا سَلَکُمْ فِی سَقَرٍۙ قَالُوا لَمْ تَرَ-ज-मए कन्जुल ईमान : तुम्हें क्या  
 نَکْ مِنَ الْمُصَلِّینَۙ وَلَمْ نَکْ बात दोख़ में ले गई वोह बोले हम  
 نَطَعُمُ الْمِسْکِینَۙ وَکُنَّا नमाज़ न पढ़ते थे और मिस्कीन को  
 نَخَوْضُ مَعَ الْخَائِضِینَۙ खाना न देते थे और बेहूदा फ़िक्क वालों  
 के साथ बेहूदा फ़िक्कें करते थे ।

(پ ۲۹، المدثر: ۴۲ تا ۴۵)

## कुछ दिन के लिये नमाज़ छोड़ सकते हैं ?

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا इर्शाद फ़रमाते हैं कि जब मेरी आंखों की सियाही बाकी रहने के बा वुजूद मेरी बीनाई जाती रही तो मुझ से कहा गया : “हम आप का इलाज करते हैं क्या आप कुछ दिन नमाज़ छोड़ सकते हैं ?” तो मैं ने कहा : “नहीं, क्यूं कि दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अलीशान है : “जिस ने नमाज़ छोड़ी तो वोह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से इस हाल में मिलेगा कि वोह उस पर ग़ज़ब फ़रमाएगा ।”

(مجمع الزوائد، کتاب الصلاة، باب فی تارک الصلاة، الحديث: ۱۶۳۲، ج ۲، ص ۲۶)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ 40 ف़रामीने मुस्तफ़ा

- 1..... أَوْلَى النَّاسِ بِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَكْثَرُهُمْ عَلَيَّ صَلَاةً .
- 2..... صَلُّوا عَلَيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْكُمْ .
- 3..... مَنْ صَلَّى عَلَيَّ وَاحِدَةً صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ عَشْرَ صَلَوَاتٍ وَ حُطَّتْ عَنْهُ عَشْرُ خَطِيئَاتٍ وَرُفِعَتْ لَهُ عَشْرُ دَرَجَاتٍ .
- 4..... إِنَّمَا الْأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ .
- 5..... نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِنْ عَمَلِهِ .
- 6..... اُطْلُبُوا الْعِلْمَ وَلَوْ بِالصِّينِ .
- 7..... خَيْرُكُمْ مَنْ تَعَلَّمَ الْقُرْآنَ وَعَلَّمَهُ .
- 8..... طَلَبَ الْعِلْمِ فَرِيضَةٌ عَلَيَّ كُلِّ مُسْلِمٍ .
- 9..... مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ تَكَفَّلَ اللَّهُ لَهُ بِرِزْقِهِ .
- 10..... مَنْ خَرَجَ فِي طَلَبِ الْعِلْمِ فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ حَتَّى يَرْجِعَ .
- 11..... مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ كَانَ كَفَّارَةً لِمَا مَضَى .
- 12..... مَنْ يُرِدِ اللَّهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ .
- 13..... مَنْ صَمَتَ نَجَا .
- 14..... مَنْ دَلَّ عَلَى خَيْرٍ فَلَهُ مِثْلُ أَجْرِ فَاعِلِهِ .
- 15..... بَلِّغُوا عَنِّي وَلَوْ آيَةً .
- 16..... الدُّعَاءُ مُخُّ الْعِبَادَةِ .
- 17..... الدُّعَاءُ يُرُدُّ الْبَلَاءَ .
- 18..... مَنْ غَشَّ فَلَيْسَ مِنَّا .

- 19..... أَلَنْدَمُ تَوْبَةً .
- 20..... أَلَتَائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَا ذَنْبَ لَهُ .
- 21..... الصَّلَاةُ عِمَادُ الدِّينِ .
- 22..... مَنْ زَارَ قَبْرِي وَجَبَتْ لَهُ شَفَاعَتِي .
- 23..... عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ .
- 24..... الدُّنْيَا سَجْنُ الْمُؤْمِنِ وَجَنَّةُ الْكَافِرِ .
- 25..... الْجُمُعَةُ حُجُّ الْمَسَاكِينِ .
- 26..... بَشِّرُوا وَلَا تَنْفِرُوا .
- 27..... السَّلَامُ قَبْلَ الْكَلَامِ .
- 28..... الْبَادِيُّ بِالسَّلَامِ بَرِيٌّ مِنَ الْكِبَرِ .
- 29..... الضَّحِكُ فِي الْمَسْجِدِ ظُلْمَةٌ فِي الْقَبْرِ .
- 30..... الْقَهْقَهَةُ مِنَ الشَّيْطَانِ، وَالتَّبَسُّمُ مِنَ اللَّهِ .
- 31..... السَّوَاكُ مَطَهْرَةٌ لِلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِلرَّبِّ .
- 32..... صَلَاةُ الْجَمَاعَةِ تَفْضُلُ صَلَاةِ الْفِدِّ بِسَبْعٍ وَعِشْرِينَ دَرَجَةً .
- 33..... لَا يَدْخُلُ الْجَنَّةَ قَتَاتٌ .
- 34..... إِنَّ الرِّزْقَ لِيَطْلُبُ الْعَبْدَ كَمَا يَطْلُبُهُ أَجَلُهُ .
- 35..... الْحَيَاءُ مِنَ الْإِيمَانِ .
- 36..... إِنَّ سَاقِي الْقَوْمِ آخِرُهُمْ شَرَبًا .
- 37..... شَعْبَانُ شَهْرِي، وَرَمَضَانُ شَهْرُ اللَّهِ .
- 38..... الْفِتْنَةُ نَائِمَةٌ لَعَنَ اللَّهُ مَنْ أَيْقَظَهَا .
- 39..... أَفْضَلُ الْأَعْمَالِ الْحُبُّ فِي اللَّهِ وَالْبُغْضُ فِي اللَّهِ .
- 40..... مَنْ تَرَكَ صَلَاةً مُتَعَمِّدًا كُتِبَ اسْمُهُ عَلَى بَابِ النَّارِ فِيمَنْ يَدْخُلُهَا .



## ماخذ و مراجع

- (۱) کلام باری تعالیٰ قرآن مجید
- (۲) علیحضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۳۰ھ کنزُ الْاَیْمَانِ فِي تَرْجَمَةِ الْقُرْآنِ
- (۳) علامہ ابو افضل شہاب الدین آلوی متوفی ۱۲۷۰ھ رُوْحُ الْمَعَانِي
- (۴) امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ صَحِيْحُ الْبُخَارِي
- (۵) امام مسلم بن حجاج بن مسلم القشيري متوفی ۲۶۱ھ صحيح مسلم
- (۶) امام ابو یوسف محمد بن عیسیٰ الترمذی متوفی ۲۸۹ھ سنن الترمذی
- (۷) امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید القزوينی متوفی ۲۷۳ھ سنن ابن ماجه
- (۸) امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۲۰ھ الْمُعْجَمُ الْكَبِيْرُ
- (۹) امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۲۰ھ الْمُعْجَمُ الْاَوْسَطُ
- (۱۰) امام احمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ شُعْبُ الْاَیْمَانِ
- (۱۱) امام ابو عبد الرحمن احمد بن شعیب النسائی متوفی ۳۰۳ھ سنن نسائی
- (۱۲) امام سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۲۰ھ المعجم الصغير
- (۱۳) امام محمد بن عبد الرحمن الخطیب الترمیزی متوفی ۵۰۹ھ مشکاة المصابيح
- (۱۴) امام عبد الرحمن جلال الدین السیوطی متوفی ۹۱۱ھ جامع الصغير
- (۱۵) حافظ شیرویه بن شہر داردیلمی متوفی ۵۰۹ھ فُرُوْغُ الْاَخْبَارِ
- (۱۶) ابو نعیم احمد بن عبد اللہ الاسعقانی متوفی ۴۳۰ھ حلیة الاولیاء
- (۱۷) امام اسماعیل بن محمد الجولانی الشافعی متوفی ۱۱۶۲ھ كشف الحفء
- (۱۸) امام ابو احمد بن عبد اللہ بن عدی جرجانی متوفی ۳۶۵ھ الْکَامِلُ فِي ضَعْفَاءِ الرِّجَالِ
- (۱۹) علامہ عبد الرؤف المناوی متوفی ۱۰۳۱ھ فیض القدير
- (۲۰) امام الشیخ ابن حجر مکی متوفی ۹۷۴ھ الْزَّوْجِرُ
- (۲۱) الحافظ احمد بن علی الخطیب متوفی ۳۶۳ھ تاریخ بغداد
- (۲۲) حضرت شریف الحق امجدی متوفی ۱۲۲۱ھ نُوْهَةُ الْقَارِي
- (۲۳) مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱ھ مِرْآةُ الْمُنْتَجِحِ
- (۲۴) شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی متوفی ۱۲۳۹ھ اشعة اللمعات
- (۲۵) علامہ یوسف بن اسماعیل النبیانی متوفی افضل الصلوات علی سید السادات
- (۲۶) شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی متوفی ۱۲۳۹ھ مدارج النبوة
- (۲۷) علیحضرت امام احمد رضا متوفی ۱۳۳۰ھ فَنَائِي رَضَوِيه
- (۲۸) مولانا عبد الرزاق بھٹو الہوی طارودی حاشیہ نور الايضاح
- (۲۹) مفتی جلال الدین احمد امجدی متوفی ۱۲۱۲ھ علم اور علماء



الحمد لله رب العلمين والشكر والسلام على سيد المرسلين انا بعد فاقول بالله من الشيطان الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم

## सुन्नत की महारें

الحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ तबदीये फुरआने सुन्नत की आलमगीर गैर शिपायी तहरीक का खते इस्लामी के महके महके म-दनी माहौल में य कसरत सुन्नतें सोची और सिखाई जाती है, हर जुमा रात इलाहा की नमाज के बाद आप के शहर में होने वाले दा'खते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों पर इम्तिहान में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निपटों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इतिहास है। अल्लिकाने रसूल के म-दनी काफिलों में य निपटे सक्कब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोजाना फिके मदीना के ज़रौए म-दनी इन्शामाल का रिस्लात पुर कर के हर म-दनी माह के इन्दिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्भ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, **إِن شَاءَ اللَّهُ مَرَّةً**। इस की व-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुदने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी धार्म अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। **إِن شَاءَ اللَّهُ مَرَّةً**" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्शामाल" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी काफिलों" में सफ़र करना है। **إِن شَاءَ اللَّهُ مَرَّةً**।

### मक-त-वतुल मदीना की सार्वे

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद ज़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429  
 देहली : 421, मटिया मद्दल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560  
 नागपुर : ग़ौब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुर, नागपुर : (M) 09373110621  
 अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाल बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385  
 हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुर, हैदरआबाद फ़ोन : 040-24572786  
 हुबली : A.J. मुदोत कोम्प्लेक्स, A.J. मुदोत रोड, ओल्ड हुबली ब्रॉज के पास, हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

मक-त-वतुल मदीना

का खते इस्लामी



फ़ज़ाये मदीना, प्री कोविदा खर्गीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया  
 Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net